तृतीय संस्करण – 1000 (प्रतियां)
सन् – 2009

**प्रकाशकः**
**सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज**
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर – 302001

**भेटा : 15/-**

**मुद्रक** : गणपति, जयपुर
मो.:9828112907



**ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी**



# गुरु वन्दना

**(सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज)**

## महिमा भजन

**:: प्रकाशक ::**
**सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज**
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट,
श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड, जयपुर

| संख्या | भजन | नाम रचियता |
|---|---|---|
| 22 | अची सतगुरु थीउ सहाई | संत मनोहरलाल जी |
| 23 | सदके वञां मा सतगुरु सर्वानन्द जे नाम तां | संत मनोहरलाल जी |
| 24 | कुदरत का देखो चमत्कार हो गया | संत मनोहरलाल जी |
| 25 | घड़ी सभा॒गी सुन्दर आई | संत मनोहरलाल जी |
| 26 | गीत गायो गीत गा॒यो | संत मनोहरलाल जी |
| 27 | सत्गुरु सर्वानन्द सुखरास | संत नामदेव जी |
| 28 | श्री स्वामी सर्वानन्द सदा | संत गोबिदराम जी |
| 29 | मेरे स्वामी सर्वानन्द जी | संत गोबिदराम जी |
| 30 | स्वामी सर्वानन्द जी ज्ञानी थे | संत गोबिदराम जी |
| 31 | श्री सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी | संत गोबिदराम जी |
| 32 | सचे अवतार है | संत गोबिदराम जी |
| 33 | स्वामी सर्वानन्द गुणवान | संत गोबिदराम जी |
| 34 | स्वामी सर्वानन्द जी आए है | संत गोबिदराम जी |
| 35 | स्वामी सर्वानन्द सुजान हो | संत गोबिदराम जी |
| 36 | स्वामी सर्वानन्द सुजान हो | संत हंसप्रकाश जी |
| 37 | स्वामी सर्वानन्द का दरबार है | संत जयदेव जी |
| 38 | सत्गुरु सर्वानन्द दातारू | संत जयदेव जी |
| 39 | स्वामी सर्वानन्द मौज मचाए व्यो | संत भजनदास जी |
| 40 | स्वामी सर्वानन्द संत सुजान हो | संत भजनदास जी |
| 41 | जोति मा जोति ज॒गाए वयो | वासदेव जी |
| 42 | स्वामी सर्वानन्द साधू सच्चारा | हेमनदास शास्त्री जी |
| 43 | श्री स्वामी सर्वानन्द जी | हेमनदास शास्त्री जी |
| 44 | स्वामी सर्वानन्द खे सारियां | हेमनदास शास्त्री जी |
| 45 | सचे स्वामी सर्वानन्द तां बलिहार | हेमनदास शास्त्री जी |
| 46 | सचो गुरु सर्वानन्द | हेमनदास शास्त्री जी |
| 47 | अचो अजु॒ सभेई गदि॒जी गीत गा॒यूं | हेमनदास शास्त्री जी |
| 48 | मुहिंजो सतगुरु सर्वानन्द | हेमनदास शास्त्री जी |
| 49 | अजु॒ दींहु सुठो आयो | हेमनदास शास्त्री जी |
| 50 | स्वामी सर्वानंद सचारो | हेमनदास शास्त्री जी |





| संख्या | भजन | नाम रचियता |
|---|---|---|
| 1. | स्वामी सर्वानन्द खे मुहिंजो | सद्गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज |
| 2. | स्वामी सर्वानन्द ज्ञानी | सद्गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज |
| 3. | गुरु भक्त थी गुरु भक्तिअ जो | सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज |
| 4. | सद्गुरु सर्वानन्द हमें अभयदान दीजिये | सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज |
| 5. | दुख दर्द करो सब दूर शरणागत मैं तेरी | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 6. | भक्ति कई सत्गुरु जी त कई स्वामी सर्वानन्द | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 7. | जगमग ज्योति जग में चमकी | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 8. | स्वामी सर्वानन्द जो मिठो नाम आ | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 9. | सुना है जग में नहीं तुमसा दाता है | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 10. | जहिंजी जग में अमर आ कमाई | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |
| 11. | स्वामी सर्वानन्द सुखदाई हैं | स्वामी गुरुमुखदास जी |
| 12 | स्वामी सर्वानन्द सुखकारी हो | स्वामी बंसतराम जी |
| 13 | स्वामी सर्वानन्द सत्गुरू वाह | स्वामी धर्मदास जी |
| 14 | स्वामी सर्वानन्द सत्गुरू | स्वामी धर्मदास जी |
| 15 | बिगडी मेरी बना दो, जयपुर के रहने वाले | स्वामी धर्मदास जी |
| 16 | पल पल तोखे पुकारियो | स्वामी धर्मदास जी |
| 17 | हींअ जोगी वैरागी हो | स्वामी ब्रह्मानंद जी |
| 18 | स्वामी सर्वानन्द महाराज हो | स्वामी ईश्वरानंद जी |
| 19 | सत्गुरु सर्वानन्द महाराज | संत मनोहरलाल जी |
| 20 | स्वामी सर्वानन्द जा मां गुण गीत गाया | संत मनोहरलाल जी |
| 21 | स्वामी सर्वानन्द सत्गुरु प्यारा | संत मनोहरलाल जी |

| संख्या | भजन | नाम रचियता |
|---|---|---|
| 80 | ओ सर्वानन्द सांई | श्यामलाल जी |
| 81 | बलिहारी वञां बलिहारी सत्‌गुरु सर्वानन्द ता | शंकर नारवानी जी |
| 82 | अमर नालो तुहिंजो अमर आ कमाई | शंकर नारवानी जी |
| 83 | दिलबर हो दिलदार | वीरभान जी |
| 84 | ओ संगत जा जीअ जिआरा | वीरभान जी |
| 85 | सत्‌गुरु सर्वानन्द धन धन | दादी चतुरी बाई |
| 86 | दे दर्शन सर्वानन्द स्वामी | कवि हेमन जी |
| 87 | मेरे सत्‌गुरु सर्वानन्द बाबा | भगत श्री मुक्त जी |
| 88 | करे याद थो हर को सत्‌गुरु | भगत श्री मुक्त जी |
| 89 | मुंहिंजो स्वामी सर्वानन्द, | हेमनदास शास्त्री जी |
| 90 | स्वामी सर्वानन्द प्यारे अब आओ पास हमारे | होतचन्द नारवानी जी |
| 91 | सचे स्वामी सर्वानन्द जी | भगत भोजराज जी |
| 92 | सत्‌गुरु सर्वानन्द प्यारो | हरिगुन जी |
| 93 | स्वामी सर्वानन्द सन्त सुधीर हुयो | भगवान दास जी |
| 94 | स्वामी सर्वानन्द सत्‌गुरु मूखे तूं दे सहारो | |
| 95 | सभु गीत खुशीअ जा गायो | |
| 96 | आओ भक्तो तुम्हें सुनाएं | लाजवन्ती जी |
| 97 | स्वामी सर्वानन्द साहिब तेरी शान निराली है | |
| 98 | खणी वञु कबूतर नियापो कबूतर उदामी | दादी कमला केसवानी जी |
| 99 | मेरा सत्‌गुरु सर्वानन्द था | महादेव जी |
| 100 | जयपुर वासी तेरी याद सताए | |
| 101 | स्वामी सर्वानन्द से प्यारा | |
| 102 | मुहिंजा जयपुर वारा जोगीराज | |
| 103 | स्वामी सर्वानन्द प्रेम प्रकाशी | |
| 104 | मुंहिंजो स्वामी सर्वानन्द सचो | हेमनदास शास्त्री जी |
| 105 | यदि जोगिनि जी सताए | स्वामी हरिदासराम जी महाराज |
| 106 | स्वामी सर्वानन्द तुहिंजी महिमा | मोतीराम जी |
| 107 | ऐ ऐ हवा, ऐ ऐ हवा न्यापो | कवि राम जी |
| 108 | झूठे जग को छोड के आजा | स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज |

| संख्या | भजन | नाम रचियता |
|---|---|---|
| 51 | सुहाना आज दिन आया | हेमनदास शास्त्री जी |
| 52 | स्वामी सर्वानंद सतगुरु मुझको | हेमनदास शास्त्री जी |
| 53 | मेरे सत्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द थे | हेमनदास शास्त्री जी |
| 54 | स्वामी सर्वानन्द सुधीर अथव | हेमनदास शास्त्री जी |
| 55 | स्वामी सर्वानन्द तुहिंजे नाम तां | हेमनदास शास्त्री जी |
| 56 | स्वामी सर्वानन्द हो सुजानी | हेमनदास शास्त्री जी |
| 57 | स्वामी सर्वानन्द सच्चे सत्‌गुरु | हेमनदास शास्त्री जी |
| 58 | कहिड़ी मां महिमा गाया | संत हरी ओमलाल जी |
| 59 | सुनो प्यारे श्रृद्धा धारे | संत हरी ओमलाल जी |
| 60 | सत्‌गुरु सर्वानन्द तेरी पूर्ण थी | संत राजूराम जी |
| 61. | मेरे सत्‌गुरु सर्वानन्द जी | संत शम्भूलाल जी |
| 62 | शिरोमणि संत सर्वानन्द | लाला नारायण जी |
| 63 | स्वामी टेऊँराम की ज्योती | लाला नारायण जी |
| 64 | स्वामी सर्वानन्द देते थे आनंद | लाला नारायण जी |
| 65 | अचु अमरापुर दे पेर भरे | भगत किशन जी |
| 66 | सतगुरु सर्वानन्द स्वामी | भगत किशन जी |
| 67 | स्वामी सर्वानन्द जी सदा | भगत किशन जी |
| 68 | स्वामी सर्वानन्द दाढ़ो महिरबान | भगत किशन जी |
| 69 | स्वामी सर्वानन्द फकीर अथव | भगत परमानन्द जी |
| 70 | स्वामी सर्वानन्द सबाझा | भगत परमानन्द जी |
| 71 | स्वामी सर्वानन्द सुखनि जी आ खाणी | भगत परमानन्द जी |
| 72 | स्वामी सर्वानन्द सच्चारा | भगत परमानन्द जी |
| 73 | स्वामी सर्वानन्द साहिब | भगत परमानन्द जी |
| 74 | हो सन्तनि में सोभारो | भगत परमानन्द जी |
| 75 | स्वामी सर्वानन्द सोभारो | मोतीराम जी |
| 76 | स्वामी सर्वानन्द प्यारो | मोतीराम जी |
| 77 | स्वामी सर्वानन्द हुयो | मोतीराम जी |
| 78 | स्वामी सर्वानन्द सचो | मोतीराम जी |
| 79 | स्वामी सर्वानन्द सत्‌गुर दर्वेश दुलारो | भगत मूलचन्द जी |

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

# प्रार्थना

हे परम पिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन !
ब्रह्माण्ड नायक ! सदा सुखदायक ! अविनाशी !
घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी ! सब सुख राशी!
सच्ची सुमति देना । स्वांग की लज्जा रखना ।
नगर बन में रक्षा कीजे । अभयदान प्रभु सबको दीजे।।
देश – परदेश दासों–बच्चों की रक्षा करना ।
धर्म की लज्जा रखना । अपनी चलती चलाना ।
अन्तकाल सुहेली करना । तन–मन–धन वाणी
करके मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे।
सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा।।
सुत अपराध करत हैं जेते । जननी चीत न राखत तेते।।
जैसे बालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे ।
कर उपदेश झिणके बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे।।
सतगुरु तुम पूरण करो, मेरी यह अर्दास ।
कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस ।।
आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाई ।।
पाइ पलउ मैं पेरे प्यादी, आयसि हेत मंझाई ।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही ।।
नाम तुम्हारा साबुन करसां, धोसां पाप सभेई ।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाई ।।
**ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !! ॐ शान्ति !!!**



ॐ श्री सत्नाम साक्षी

## सद्गुरु श्री सर्वानंदाष्टकम्

1. सर्वज्ञं सद्गुरुं देवं, सर्व जीव हिते रतम् ।
अज्ञानाद्ध्वान्त विध्वसं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
2. ब्रह्मज्ञं सर्व धर्मज्ञं, ब्रह्मचारि व्रते स्थितम् ।
क्रियावन्तं परं धीरं, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
3. तपस्विनं सुसिद्धं च, शिष्य सन्ताप हारकम् ।
सर्वेषां ज्ञान दातारं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
4. ज्ञान विज्ञान सम्पन्नं, सर्व ताप नाशकम् ।
रक्षकं सर्व धर्माणां, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
5. प्रेम प्रकाश मण्डल, रक्षार्थं धृत विग्रहम् ।
सर्व स्वरूपं सर्वेशं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
6. पूर्णज्ञान समायुक्तं, जगदज्ञान नाशकम् ।
परे ब्रह्मणि निष्णातं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
7. गत्वादेश विदेशे च, सत्य धर्म प्रचारकम् ।
अध्यात्म ज्ञान सम्पन्नं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
8. निर्मानं निर्भयं चैव, द्वंद्वातीतं तथैव च ।
निःसगं निर्मलं चैव, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।

## सद्गुरु सर्वानन्द महिमा

1. सर्वानन्द प्रदातारं, सर्वानन्द विकासकम्।
सर्वानन्दावितारंच, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।

2. श्रीमान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, मुकुटालंकार रूपो गुरुः।
योगः क्षेमकरः सुपूज्य चरणौ, रामेण तुल्यो गुणैः।।
संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे, धर्म प्रचारे रतः।
सर्वानन्द यतीश्वरो विजयते, प्रेम प्रकाशे भुवि।।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

# सद्गुरु सर्वानन्द चालीसा

**पूरण पार ब्रह्म को बार बार है वन्द ।**
**सर्वानन्द बन सर्व को दीना सर्वानन्द ।।**

**आनन्द अमृतलोक का आए बांटन काज।**
**अमर देश से सतगुरु सर्वानन्द महाराज ।।**

**एक गुरु की ओट ली एक गुरु आधार ।**
**एक भाव से भक्ति कर हो गए भव से पार ।।**

**इष्टराम के शंभु है शंकर के हैं राम ।**
**स्वामी सर्वानन्द के सत्गुरु टेऊँराम ।।**

**वशिष्ठ गुरु हैं राम के सांदिपनि गुरु श्याम ।**
**स्वामी सर्वानन्द के सतगुरु टेऊँराम ।।**

**सत्गुरु ब्रह्म स्वरूप है सत्गुरु है महादेव ।**
**विष्णु रूप गुरु जान के ताँकी कीनी सेव ।।**

**इष्ट गुरु भगवान सब सत्गुरु टेऊँराम ।**
**पूर्ण श्रद्धा भाव से बार बार प्रणाम ।।**

सिन्धु देश में सुन्दर ग्रामा भिट्टशाह है तांका नामा
तां में रहते सेवकरामा तां घर आए गुरु सुखधामा
ईश्वरी देवी मात प्यारी भगवत भक्ती करत न्यारी
गोद पवित्र तांकी कीनी मन की दुविधा सब हर लीनी
देख देख के मोहक रूपा हर्षी मात देख स्वरूपा
सुन्दर भजन सुनावन लागी लोरी दे दे गावन लागी
चेलाराम नाना सुखदाई नानी तांकी कृष्णा बाई
दे आशीष दुलारन लागे मीठे वचन उच्चारन लागे
दिव्य तेज मुख ऊपर चमके दामिनि नभ में जैसे दमके





शान्त एकान्ती धीरजधारी बालक सुख देता सुखकारी
बचपन से मन विषयों माहीं एक निमष भी अटका नाहीं
ज्यों ज्यों आयू बढ़ने लागी त्यों त्यों उपशम वृत्ती जागी
खान पान पहरन के माहीं रंचक वृत्ती लगती नाहीं
बालक का यह देख स्वभावा मात हृदय अति दुख को पावा
ले बालक निज मैके आई आकर बालक दशा बताई
घर में भक्ति भाव था भारी सत्संग की वर्षा सुखकारी
सत्गुरु टेऊँराम का दर्शन करके मन होया अति प्रसन्न
बैठ चरण में शीश झुकाया सतगुरु शरन आपकी आया
भव जल दुस्तर भगवन् भारी अब तो लीनी ओट तुम्हारी
कृपा कर निज दास बनाओ नाम दान दे मोहि जगाओ
जग के विषय भोग दुखदाई तां में सूख न देखा राई
सतगुरु सिर पर हाथ घुमाया नाम दान दे शिष्य बनाया
नाम की मणी अमोलक पाई वृत्ती सत्गुरु शब्द समाई
तन से सेवा मन से सुमिरन इस विधि बीतन लागा जीवन
गुरुकृपा से भया प्रकाशा अविद्या तम का भया विनाशा
वाणी भी अब बरसन लागी नाम जपाया हरि अनुरागी
गांव गांव में हरि गुन गाया प्रेम प्रकाशी ध्वज झुलाया
गुरु आज्ञा ले तप के कारन ऋषीकेश में कीना आसन
झाड़ी सुन्दर एक बनाके तांमें बैठे ध्यान लगाके
अल्पाहारी निंद्रा जीती पूरण लाई गुरु से प्रीती
सुन्न मण्डल में लाय समाधी पाया आतम सूख अनादी
गुरुमंत्र से मन को जीता हर्ष शोक से भया अतीता
गुरु महिमा निशिवासर गाए अविद्या नीन्द से सबहिं जगाए
महा प्रयाण सत्गुरु जब कीन्हा पंच भूत तन को तज दीन्हा
आसन सब मिल इन्हहिं बिठाए यश कीर्ति सत्गुरु प्रगटाए
भया विभाजन भारत का जब जयपुर आ स्थान किया तब
तीन लोक प्रसिद्ध महाना यहां बना सुन्दर अस्थाना
अमरापुर स्थान नाम है अमृतमय सो अमर धाम हैं

प्रतिमा गुरु की और समाधी दर्शन से ही कटे व्याधी
उन्नत ध्वजा प्रेम प्रकाशी परिक्रमा से कटे चौरासी
ग्रंथ प्रेम प्रकाश छपाया गुरुवाणी को अमर बनाया
धन्य धन्य गुरु सर्वानन्दा दर्शन से पाइए आनन्दा
सर्वानन्द नाम जो गावे भवसिन्धु से शीघ्र तर जावे
एकदेशी नहीं एकानन्दा सर्वानन्द सर्व आनन्दा
अल्पकालिक नहीं अल्पानन्दा सर्वानन्द सर्व आनन्दा
**स** जानो सचिदानन्द रूपा रमता राम **र** सर्व अनूपा
**वा** वायू के बीच समाया **न** नारायण बन जग जाया
दीन दयाल **द** दे आनन्दा जय जय जय गुरु सर्वानन्दा

**धनहर गुरु जग बहुत हैं मनहर जग में चन्द ।**
**मनहर मन मोहन मिला सत्गुरु सर्वानन्द ।।**

**आत्मानन्द अखण्ड सो स्वयं सच्चिदानन्द ।**
**परमानन्द मय आप सो सत्गुरु सर्वानन्द ।।**

**सर्व शिरोमणि सन्त हैं सदा देत आनन्द ।**
**किन्तु हमारे मन बसे सत्गुरु सर्वानन्द ।।**

**गुरु चालीसा गाय जो नित निष्ठा के साथ ।**
**सत्गुरु के तिस दास को यम न लगावे हाथ ।।**

**इति!**



## भजन–1

थलुः स्वामी सर्वानन्द खे, मुंहिंजो सदा नमस्कार आ।
सत्गुरु टेऊँराम जे, गादीअ जो सरदार आ।।

1. कहिणी बहिणी रहिणी, सहिणी साईंअ जी सुठी।
खिमिया धीरज सरलता, ज्ञान संदो भण्डार आ।।

2. सत्गुरु टेऊँराम भी, जोति पंहिंजी हिन में रखी।
जे था मूंखां सचु पुछो, ईश्वर जो अवतार आ।।

3. मोहन मुरलीअ सां जीएं, मस्त कयो कुल ब्रज खे।
मिठड़ीअ वाणीअ सां तिएं, मोहियो सजो संसार आ।।

4. तारन में जीअं चन्द्रमा, सूंहें सभिनी खां सुठो।
सन्तनि में सूंहें तीएं, संगति जो सींगार आ।।

5. जहिडो संदन नाउं आ, तहिड़ो आनन्द दे सभिनि।
महिमा कहिड़ी मां चवां, प्रेमियुनि जो आधार आ ।।

6. दुनिया जे कुंड कुड़िछ में, नालो साईंअ जो वजे ।
''शांति प्रकाश'' जिते किथे, सत्गुर जो जयकार आ।।

## भजन–2

थलु स्वामी सर्वानन्द ज्ञानी, हुयो लाल सचो लासानी।।

1. जीअं चंडं सूंहें तारनि में, तींअं साईं सूंहें साधनि में।
जंहिंजी सूरत हुई सुबहानी ।।

2. जंहिंजी रहिणी हुई रस वारी, जंहिंजी सहिणी हुई जसवारी।
जंहिंजी मिठडी हुयड़ी बाणी।।

3. जेको विषयुनि खां वैरागी, हुयो आतम जो अनुरागी।
हुयो सन्तु सचो सैलानी।।

4. जेको संगति जो त सहारो, हुयो प्रेमियुनि खे भी प्यारो।
हुयो श्रेष्ठ गुणनि जी खानी।।

5. छा ''शान्ती प्रकाश'' सुणाए, गुण कहिड़ा कहिड़ा गाए।
वञां कदमनि तां कुर्बानी।।





## भजन–3

तर्जः देख तेरे संसार की हालत ......

थलुः गुरू भगत थी गुरू भगितीअ जो, करण आयो प्रचार।
सत्गुरु सर्वानन्द दातार।
महिमा तंहिंजी कहिडी चइजे, सर्व गुणनि भण्डार।
सत्गुरु सर्वानन्द दातार।

1. सिन्धु देश में जनम वतो हो, मेलो तदहीं खूब मतो हो,
धरतीअ ते धणी पाण लथो हो, जोगिनि जो जिते जुड़ियो जथो हो।
सत्गुर पंहिंजी गोद विहारे, भागु कयो त भलार।।

2. बालापण खां सत्गुर दर ते, सेवा हुई जंहिं खूब कमाई।
तन मन धन जी भेटा देई, चरिननि में चित्त वृति लगाई
ऋषीकेश में रही अकेलो, नाम जप्यो निर्वार।।

3. सबुर शुकर खे दिल में धारे, चित्त जी चिन्ता चूर कयाईं।
सखत्यूं सूर सहारे सिर ते, गमु खाई गम दूर कयाईं।
सभखे प्यार में पहिंजो कयड़ो करे प्रेम प्रचार।।

4. देश विदेश जो सैर कयाई, तर्क दुनिया जो गैर कयाईं।
प्रेमिनि जो पिण खैर कयाईं, ब्रह्म ज्ञान जो फैर कयाईं।
पूरण पुरुष सचो जोगी हो, संतनि में सरदार।।

5. सूरत सुहिणी मुहिणी मूरत, हरि दिल अन्दर वास करे थी।
सत्गुर नाम जी जगमग ज्योती, प्रेम संदो प्रकाश करे थी।
''हरीदास'' जी वृति रहे शल, सत्गुर चरण मंझार।।

## भजन–4

टेकः सद्गुरु सर्वानन्द हमें, अभय दान दीजिये।
अभय दान दीजिये, कर्म काट लीजिये।।

1. हे अखण्ड हे अपार, ज्ञान ध्यान के भण्डार।
बार–बार नमस्कार, स्वीकार कीजिये।।

2. पतित पावन पाप हरो, सिर पै दया हाथ धरो।
अधम का उद्धार करो, भव से पार कीजिये।।

3. उमर सारी पाप भारी, करत करत मति है मारी।
क्षमा करो एक बारी, सुमति दान दीजिये।।

4. तुम्हें छोड़ कहां जाऊँ, सूझत नहीं ठौर ठाऊँ।
बार–बार पडत पाऊँ, शरण राख लीजिये।।

## भजन–5

तर्जः ऐ मेरे दिल ए नादान .........

टेकः दुख दर्द करो सब दूर, शरणागत मैं तेरी।
स्वामी सर्वानन्द महाराज, सब विपत्ति हरो मेरी।।

1. अनगिनत कामनाएं, मन में मेरे बसतीं।
काली नागिन बनकर, दिन रात मुझे डसतीं।
अब भस्म उन्हें कर दो, मत नाथ करो देरी।।

2. यह विकट क्रोध ज्वाला, जिस क्षण प्रज्ज्वलित होती।
ना मरम ना शरम रहे, सब शान्ति सुमति खोती।
अब शान्त इसे कर दो, जिसने मम मति घेरी।।

3. यह लोभ सदा मन को, इत उत भटकाता है।
तम मोह का ऐसा है, कुछ नजर न आता है।
अब नाश इन्हें कर दो, ये है जन्मों से वैरी।।

4. अहंकार बली सबसे, दुष्कर है दुख दाता।
मैं मेरा का बंधन, ना तोड़ कोई पाता।
मुझे बन्धन मुक्त करो, बन जाऊं तव चेरी।।

5. दुस्तर भव सागर में, गोते खाते खाते।
युग बीत गए मुझको, जग में आते जाते।
अब पार मुझे कर दो, मिटे चौरासी फेरी।।





## भजन–6

तर्जः दे दी हमें आजादी .........

थलुः भगिती कई सत्गुर जी, त कई स्वामी सर्वानन्द।
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

1. कलियुग जे कहर मुल्क में बारण जदी बारियो।
दुःख दर्द मां दांहू करे प्रेमियुनि हो पुकारियो।।
सिन्धुड़ीअ जे नंढे गोठ में गुरुदेव पधारियो।
भिटशाह सुन्दर गाम में जंहिं जनम हो धारियो।।
सवली कई प्रेमिनि जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

2. नन्ढपिण खां राम नाम जो पीतो हो प्यालो।
तृष्णा खे करे तर्क कयो अन्दरु उजालो।।
संसार में रही बि रहियो सभ खां निरालो।
जुहिदनि सां करे जोग करे अमर व्यो नालो।।
सफली कई देही त कई स्वामी सर्वानन्द।।

3. सत्गुर जी वठी शरण कई प्रेम पढ़ाई।
तन मन जी गुरूअ, गोद में जंहिं भेट चढ़ाई।।
निष्काम थी निर्मान सभ मां सारु खयांई।
गुरुदेव सन्दे हुकुम जी तामील कयाईं।।
आज्ञा मञी गुरुदेव जी हुई स्वामी सर्वानन्द।।

4. गुरु ब्रह्मा गुरू विष्णु महादेव आ गुरू।
संसार में सभिनी खां वदो देवु आ गुरू।।
माया जो कटे जारु करे पारि थो गुरू।
शरनागतनि जी सिक सां लहे सार थो गुरू।।
अहिड़ी अटूट श्रद्धा रखी स्वामी सर्वानन्द।।

## भजन–7

तर्जः ईचक दाना मीचक दाना ............

टेकः जगमग ज्योती जग में चमकी, मन में खुशियां छाई लाख बधाई।
जन्म लिया है जोगी ने यह, घड़ी सुहानी आई, लाख बधाई।।

1. पिता सेवकराम है, भिटशाह गाम है।
ईश्वरी देवी माता है, जिस घर आया दाता है।
सर्वानन्द है नाम उसी का, अद्भुत आनन्द दाई ।।

2. सत्गुरु टेऊँराम है, योगी निष्काम है।
ज्ञान बता अज्ञान मिटाना, ये ही उनका काम है।
सत्गुरु मिल गया पड़दा खुल गया, ज्ञान की ज्योति जगाई ।।

3. सुमरन में नित मगन हुआ मन, गुरु सेवा में अर्पित था तन।
वाणी से गुरु महिमा गाकर,मन की शान्ती पाई।।

4. नाम गुरू का घर घर गाया, शहर–शहर में मन्दिर बनाया।
अद्भुत अपनी लीला कर फिर, ज्योती ज्योति समाई ।।

5. अमरापुर धाम है, जयपुर में विश्राम है।
मन्दिर जहां समाधी है, मन की कटती व्याधी है।
करके दर्शन मन हो प्रसन्न, सबने महिमा गाई।।

## भजन–8

तर्जः अच्छा सिला दिया तूने ............

थलुः स्वामी सर्वानन्द जो मिठो नाम आ।
सन्तनि जो शिरोमणि सो सुखधाम आ।।

1. माता ईश्वरी देवी – पिता सेवकराम हो।
सिन्धु जे अन्दरि हिकु – भिट्टशाह गाम हो।
आयो अवतार वठी – सुन्दर शाम आ।।

2. नंढ़पण खां साईअ जो – रंगु ही निरालो हो।
जग खां किनारो करे – पीतो प्रेम प्यालो हो।
पाण पी ब्रियनि खे – पियारियो जाम आ।।



3. स्वामी टेऊँराम जी जंहिं – भगिती कमाई आ।
गुरुअ खे गोबिन्द जाणी – ममता मिटाई आ।
अहिड़े सुहिणे सतगुर – खे प्रणाम आ।।

4. सिन्ध ऐं हिन्द में – आखाड़ा हलाए विया।
भव ऐं भरम सन्दा – भूत से भजाए विया।
अमरापुर जोगीअ जो – अमरधाम आ।।

## भजन–9

तर्जः तेरी जुल्फों से जुदाई तो ..................

टेकः सुना है जग में नहीं तुम सा कोई दाता है।
तेरी दरबार से खाली न कोई जाता है।।

1. आया इक प्रेमी था, बेटा न जिसका बोल सके।
सैकड़ों कोशिशें, कर करके थे मां बाप थके।
तेरी रहमत से, वो गूंगा भी गीत गाता है।।

2. श्रद्धा और प्रेम से, जिसने भी तुझको याद किया।
सुबह और शाम को, गुरुदेव तेरा नाम लिया।
उसे दुनिया का, कोई कष्ट ना सताता है।।

3. जो भी नित नेम से, आ करता समाधी दर्शन।
साक्षी सत्नाम का, मन्तर जो जपे है निशदिन।
तोड़ भव बन्धन, मुक्ती को वही पाता है।।

## भजन–10

तर्जः दीदी तेरा देवर दीवाना ..........

थलुः जंहिंजी जगु में अमर आ कमाई, स्वामी सर्वानन्द सुखदाई।

1. ईश्वरी देवी माता, पिता सेवकराम।
भिटशाह नगर में, आयो आ सुखधाम।
वरी घर घर में आहे वाधाई।।

2. नन्ढपिण खां नाम, सां नीहुं लगायो।
छदे जगतु सारो, सचो नामु ध्यायो।
जंहिं मन जी हुई ममता मिटाई।।

3. मिल्यो सत्गुरू हो स्वामी टेऊँरामु।
सचे नाम जो जंहिं, पियारियो हो जामु।
भुली जग जी वई सभु वाई।।
4. ऋषीकेश झाड़ीअ में, वेही अकेलो।
कयो मन मन्दर में, जंहिं मोहन सां मेलो।
साखी शिवोहम् जी धुनी लगाई।।
5. वहे जेसीं गंगा, ऐं जमुना जी धारा।
अमर नाम जग में, जेसीं चन्डु ऐं तारा।
गुरु ज्ञान जी जंहिं ज्योती जगाई।।

## भजन–11

तर्जः मोरी छम छम बाजे पायलिया ...........
टेकः स्वामी सर्वानन्द सुखदाई है,
सदा सबसे करत भलाई है।
1. करे प्रेम सर्व से न करते गिला।
जैसे फूल कमल का हो जल में खिला।
है सबका सजन, बोले मीठे वचन।
कभी किसकी दिल न दुखाई है।।
2. निज ब्रह्मज्ञान का करते कथन।
करें प्रेम में सारी सभा को मगन।
लागी सबको लगन, गूंज ऊठे गगन।
ऐसी रिमझिम रास रचाई है।।
3. लेके मण्डल सु प्रेम प्रकाश करें।
गुरु भक्ती का हरदम हुलास करें।
जहां करते सफर, तहां होता असर।
ऐसी हर जाय मौज मचाई है।।
4. ज्योति गुरुदेव की निश्चय जानो इसे।
धार श्रद्धा सच्चा मीत मानो इसे।
ये निष्काम है, सच्चा सुख धाम है।
ऐसी ''गुरुमुख'' दीन्ही गवाही है।।



## भजन–12

तर्ज दिल लूटने वाले जादूगर ...........
थलु स्वामी सर्वानन्द सुखकारी हो, सभु जीवनि जो हितकारी हो।
1. जंहिं जुवानीअ में ई जागु करे, घर घन्घर जो पिणु त्यागु करे।
गुर चरननि में अनुरागु करे, कयो हरि सुमरण हरवारी हो।।
2. सत्गुर जी जंहिं गादी वसाई, सत्संग जी हुई मौज मचाई।
कई सत्कर्मनि जी हुई कमाई, पूरणु पर उपकारी हो ।।
3. हरिद्वार में आश्रम ठाहे वियो, अमरापुर धामु बणाए वियो।
ग्रंथु प्रेम प्रकाशी छपाए वियो, डाढो अकुलमन्दु उदारी हो।।
4. मेला मण्डल खूबु मचाए वियो, रास रांवल वांगे रचाए वियो।
पंहिंजो नालो अमरु बणाए वियो, वडो वैरागी वीचारी हो।।
5. सभु सखित्यूं सूर सहारे वियो, कुछु कंहिंखे कीन उचारे वियो।
सबुर शुकुर सां उमिरि गुज़ारे वियो, दिलि अंदरि धीरजधारी हो।।
6. भालु ''बसन्त'' साणु भलाए वियो, नेही सभ सां नींहुं निभाए वियो।
फिरि मिलण खां मोकलाए वियो, जो भगितीअ जो भंडारी हो।।

## भजन–13

तर्जः ओ दुर के मुसाफिर ......
थलुः स्वामी सर्वानन्द सत्गुरु, वाह जा कई कमाई।
वाह जा कई कमाई, दर्वेश हो इलाही।।
1. संतोष दिलि में धारे, तृष्ना खे छदियईं जारे।
निहठो रही निमाणो, मनखे छदियाईं मारे।
दातर तुहींजे दिलि में, हुयो वेरु ना वडाई।।
2. हो रहिणी कहिणी वारो, सभ खां रहियो नियारो।
आया शरन में जेके तालिब, तिनिखे दिनईं सहारो।
भोला भरम विञाए, सभ जी कई सणाई।।
3. शांती सबुर जो सागर, गुरु भगिती वियो देखारे।
सादो रही दुनिया में, सभखे वियो सेखारे।
प्रीतम पंहिंजे प्यार जी, हुई जोति का जगाई।।
4. भुलिजी बि कंहिंजे दिलि खे, दातर न हो दुखायो।
समता में रही साहिब, कंहिंखे न घटि हो भायो।
''धर्मदास'' तंहिंजी मुख सां, कहिड़ी कयां वडाई।।

## भजन–14

तर्ज: कव्वाली

थलु स्वामी सर्वानन्द सत्गुर, वाह जा कई फकीरी।
वाह जी कई फकीरी, दिलि सां छदि़यई अमीरी।।

1. फाका कढी जो तनखे, मारे छदि़याईं मनखे।
हुयो मोह कोन धन में, सुहिणी हुई सबूरी।।

2. सभ में हुई किनायत, आयल लइ हुई इनायत।
साईंअ में हुई सखावत, दिलि में न हुई दिलिगीरी।।

3. हो यार में यकीनो, दिलि मां कढियाईं कीनो।
साहे कदि़हिं न सीनो, पंहिंजी कयाईं पीरी।।

4. वैरागी रागु गाए, वियो मौज का मचाए।
सत्गुर जो जसु वधाए, मुल्कें कई मशहूरी।।

5. ''धर्मदास'' कंहिं सुञातो, हिन मर्द खे हो ज़ातो।
रखी नींहं वारो नातो, हाजिर दि़ठईं हजूरी।।

## भजन–15

तर्ज: कव्वाली ............

टेक: बिगड़ी मेरी बना दो, जयपुर के रहने वाले।
जयपुर के रहने वाले, जोगी राज जयपुर वाले।।

1. कांटों भरा किनारा, राही मैं थक गया हूं।
बाबो मुझे बचालो, जयपुर के रहने वाले।।

2. मंझधार में है नैया, साथी न साथ कोई।
किश्ती किनारे ला दो, जयपुर के .......।।

3. दुःख दर्द की ये आंहें, साजन किसे सुनाऊं।
उजड़ा चमन खिला दो, जयपुर के ........।।

4. ''धर्मदास'' दर पे आया, दुःख दर्द का सताया
सत्गुरु गले लगा दो, जयपुर के ........।।



## भजन–16

तर्ज: बिगडी मेरी बना दो जयपुर के रहने वाले ...

थलु: पल–पल तोखे पुकारियां – स्वामी सर्वानन्द प्यारा ।
जोगीराज जयपुर वारा।।

1. निर्धन खे धनु तूं दीं थो, निपुटनि खे दीं थो पुटड़ा।
स्वाली वयो न खाली, तुंहिंजा भरियल भण्डारा।।

2. तुहिंजी सख़ी सखावत, कंहिंखां ग़ुझी न आहे।
दोखिनि जा दुख तो लाथा, तुंहिंजा अजब निजारा।।

3. दरवेश तुंहिंजी रहमत, जंहिंजे मथां थिए थी।
अणखुट खजानो तंहिंखे, दि़यारीं थो दि़यण वारा।।

4. आशा रखी जे आया, सत्गुर तुंहिंजे द्वारे।
झोलियूं भरे विया से, नूरी तुंहिंजा निजारा।।

5. ''धर्मदास'' दर ते स्वाली, आयो थी आश धारे।
मालिक मया करे तूं, दे़ हथिड़ा हिम्मत वारा।।

## भजन–17

तर्ज: संसार है इक नदिया ............

थलु: हीउ जोगी वैरागी हो, सचु पचु त त्यागी हो।
हुयो ध्यानिनि में ध्यानी, स्वामी सर्वानन्दु त्यागी हो।।

1. रही दुनिया में सांई, दुनिया खां न्यारो हो।
चमके जिअं तारनि में, चंड ज्यां उजियारो हो।
संसार जे सागर में, सदा सांईं सुजागी हो।।

2. थिया जोगी घणा जग में, हीउ जोगी न्यारो हो।
जंहिंजे मुहं में हुई मणिया, भगितीअ जो भण्डारो हो।
बि़या लाल लखें मूं दि़ठा, हीउ हरि अनुरागी हो।।

3. जेसीं सिजु चंडु आ जग में, तेसीं नालो पियो हलंदो।
आहे अमर ''ब्रह्मानन्द'' सो, ईंएं सबको पियो चवन्दो।
जिन दर्शन कयो दिल सां, सो थियो वदु़भागी हो।।

## भजन–18

तर्जः मुहिंजी बे॒ड़ी अथई विच सीर ते ....

थलुः स्वामी सर्वानन्द महाराज हो, जेको प्रेमिनि लाइ सिरताज हो।।

1. मन जी हो सो मुहिणी मूरत, सुहिणी हो सो सुन्दर सूरत।
जहिं में नट नागर जीअ नाज हो।।

2. सम सन्तोष हो धीरज धारी, परम प्रेमी हो उपकारी।
जेको सदा गरीब निवाज हो।।

3. जेको आयो थे दर ते स्वाली,तंहिंखे छदि॒याईं कीनकी खाली।
कन्दो पूरण सभ जा काज हो।।

4. त्यागि॒नि में हो पूरन त्यागी॒, वैरागि॒नि में हो वैरागी॒।
जंहिं में निवड़त ऐं बि॒यो न्याज हो।।

5. प्रेम प्रकाशी ग्रन्थ छपायो, अमरापुर स्थान ठहरायो।
जेको हलन्दो वद॒न जो रवाज हो।।

6. गुरवाणीअ जो हो प्रचारी, रहणी कहणी हो सदाचारी।
सदा कंदो स्वतंत्र राज हो।।

7. संत सचो हो ब्रह्म ज्ञानी, अन्तर मुख हो आतमध्यानी।
जंहिं में संतन लाइ लिहाज हो।।

8. सत्संग जी हो मौज मचाईंदो, संगत जी हो दिल सरचाईंदो।
जेको वजा॒ईंदो करताल साज हो।।

9. स्वामी टेऊँराम जो हो चेलो, सभ सां हो जंहिंजो मुहबत मेलो।
सत्गुरुन जो जंहिं ते राज हो।।

10. सिन्ध भिटशाह में जन्म वताऊं, जयपुर अमरापुर अदि॒याऊ।
जंहिंजो गंगा माता सां राज हो।।

11. नेम टेम जो हो सो पूरो, मन इन्द्रीजीत हो सो सूरो।
जंहिजो मिठो मिठो आवाज हो।।

12. ''ईश्वरानन्द'' कहिड़ी महिमा गा॒ए, महिमा गा॒ए पार न पाए।
जेको सभिनि सुखनि जो साज हो।।



## भजन–19

तर्जः घर आया मेरा परदेसी ....

टेकः सत्गुरु सर्वानन्द महाराज, शरण तुम्हारी आया मैं।।

1. देखी दुनिया की यारी, मतलब की नातेदारी।
फंस कर उनके संग अकाज, दुःखी होय पछताया मै।।

2. भटक रहा था दुखियारा, अपनी किस्मत का मारा।
तकदीरें हैं पलटी आज, दरस तुम्हारा पाया मैं।।

3. खोज रहा था सदियों से, आज मिले कृपा करके।
जयपुर के महा योगीराज, चरने सीस निवाया मैं।।

4. जैसा तैसा हूं तेरा, मुझको कर अपना चेरा।
तुम हो गुरू गरीब निवाज, तेरा दास कहाया मैं।।

5. द्वार तुम्हारा छूटे ना, ''मनोहर'' प्रेम ये टूटे ना।
हरदम रखियो मेरी लाज, ये ही अर्ज सुनाया मैं।।

## भजन–20

तर्जः यशोमति मैया से .....

थलुः स्वामी सर्वानन्द जा मां, गुण गीत गा॒यां।
आयो अवतार धारे, खुशियूं मनायां।।

1. पिता सेवकराम माता, ईश्वरी बा॒ई।
तिनिखे वाधायूं दि॒यनि, सभई माई भाई।
मां बि अंहिड़े जोगी॒अ जूं अजु॒ वाधायूं वरायां।
मिठायूं विर्हायां।।

2. सत्गुर जी सुहिणी सूरत, आहे दा॒ढी प्यारी।
जेको करे दर्शन तंहिंखे, अचे पई बहारी।
मां बि अहिड़े सत्गुर जो अजु॒, दर्शनु थो पायां।
संगति खे पसायां।।

3. नालो स्वामी सर्वानन्द जो, आहे सुखकारी।
जेको करे जाप तंहिंजी, टरे विपत्ति सारी।
मां बि अहिड़ो नालो ''मनोहर'', सबखे जपायां।
जै जै चवायां।।

## भजन–21

तर्जः चाहूंगा मैं तुझे सांझ सवेरे ..................

थलुः स्वामी सर्वानन्द सत्गुरु प्यारा,
जोगी राज मुहिंजा जयपुर वारा, आधार मूंखे तुहिंजो।।

1. जाचे दिठम जगत सजो, तोखां सवाइ संगी न को।
हिकवार अची मूंखे तार–तार आधार मूंखे ...... ।।

2. ख्वाब तुंहिंजा, अख्युनि दिठा, दर्शन दे मुहिब मिठा।
मनठार गुरू गम टार–टार, आधार ..... ।।

3. वेहु अची अखडियुन में, तोखे दिसां छिन छिन में।
दिलदार हींएं जा हार–हार आधार ..... ।।

4. चाह अथम चरननि जी, गुरु तुंहिंजे दर्शन जी।
न विसार अची लहु सार–सार आधार ....... ।।

5. चरणनि जे चाकर जी, मिन्थ मञो ''मनोहर'' जी।
पहिंजो प्यार दिजो हर वार–वार आधार .......।।

## भजन–22

तर्जः तुझे याद न मेरी आई ............

थलुः अची सत्गुरु थीउ सहाई, मूं तुंहिंजी ओट वती।
स्वामी सर्वानन्द सुखदाई, मूं तुंहिंजी ओट वती।।

1. सखी आहीं तूं सबाझो, वाह सांई वाह,
खुलियल तुंहिंजो दर दया जो, वाह सांईं वाह।
मां आहियाँ नंढ़िडो बालक, आहीं महर भरियो तू मालिक।
रख हथड़ो सिर ते सदाईं।।

2. जमाने मुंखे सतायो, हा सांईं हा,
दुखन सां मुखे दुःखायो, हा सांईं हा।
मां आहियां दीन दुखियारो, अची वरतुम तुहिंजो सहारो।
सब दुखड़ा दर्द मिटाईं।।

3. कीअं गौरीशंकर जो सभ, रोग मिटायो तो।
कीअं हरीचन्द जे नियाणीअ जो, भागु बणायो तो।
''मनोहर'' जो भागु बणाईं।।



## भजन–23

तर्जः चन्दा की चांदनी में झूमे झूमे मन मेरा ......

थलुः सदके वञां मा सतगुरु, सर्वानन्द जे नाम तां।
सर्वानन्द जे नाम तां, सर्व सुखन जे धाम तां।।

1. मथुरो शरनि में आयो, रोई जंहिं हाल बुधायो।
बालक आ वयो गुजारे, तहिंजी गुर जान बचायो।
मोटायव छंडो हणीं, तंहिंखे जम जे ठाम तां।।

2. धम्मी ऐं प्रीतम आया, दिल जा तिनि दर्द बुधाया।
प्रेम कयो खेटो दाढो, हीला थऊं जाम हलाया।
सत्गुर तिनि अर्ज उनायो, मनीला प्रोग्राम तां।।

3. रूअन्दी भगवानी आई, दर्द भरी दांहं बुधाई।
मोट्यो अशोक नाहे, चिंता आहि जान जलाई।
आणें अशोक छदायुव, तंहिंखे बेआराम तां।।

4. आह्यो गुरु अन्तर्यामी, हीणनि सां हरदम हामी।
पंहिंजे दासनि जी कुछु भी, कीन दिसो था खामी।
पलि पलि चरननि में ''मनोहर'' करियां थो प्रणांम मां।।

## भजन–24

तर्जः लोक धुन भैरवी

टेकः कुदरत का देखो चमत्कार हो गया, सारे जगत में जै जै कार हो गया।
सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का, धरती पे आज अवतार हो गया।।

1. आई सुहानी देखो आज ये घड़ी, बरसे गगन से सुमन की लड़ी।
सारा चमन गुलज़ार हो गया।।

2. ईश्वरी माता के है भाग्य का कमाल, सेवकराम जी भी हो गये निहाल।
चन्दा का सबको दीदार हो गया।।

3. खुशियों में झूमे सारा भिटशाह गाम, जन्मे अवध में जैसे कौशल्या के राम।
घर घर आनन्द का संचार हो गया।।

14

4. झूले में झूल रहे स्वामी सर्वानन्द, जैसे यशोदा ग्रह झूले ब्रज चन्द।
निर्गुण ब्रह्म साकार हो गया।।
5. दर्शन देने आए स्वामी टेऊँराम, गोदी में लेके मुख चूमा सुखधाम।
आंखों आंखों में इकरार हो गया।।
6. आया अनोखा दिन आज बेमिसाल, सत्‌गुरु को आये हुए एक सौ छै साल।
गद् गद् सारा संसार हो गया।।
7. गंगा किनारा हरिद्वार गुरु धाम, सत्‌गुरु के जन्मोत्सव का मेला अभिराम।
''मनोहर'' अजब इसरार हो गया।।

## भजन–25

तर्ज: नील गगन पर उड़ते बादल...

थलु: घड़ी सभागी सुन्दरु आई, आ–आ–आ ।
देहि धरे आयो स्वामी सर्वानन्दु, सभखे वाधाई आ ।।
लहरि खुशीअ जी हरहन्धि छाई, आ–आ–आ ।
देहि धरे आयो ..... ।।

1. महिनो असूअ जो तारीख ॿार्हीं, विस्पति भाॻनि वारी।
माता ईश्वरी ॿाईअ जे घरि, आयो कृष्ण मुरारी ।
सेवकराम जे दिलि में कीनकी, खुशी समाई आ।।
2. सत्‌गुर जे अवतार वठण सां, हर हन्धि आनन्दु छायो।
चोॾसि जो ॼणु चंडु लही अॼु, हिन धरतीअ ते आयो।
देवनि खुशि थी गुलनि संदी, बरसाति वसाई आ।।
3. नगर–नगर जे गलीअ–गलीअ में, छाई खूबु बहारी।
ज्ञान सन्दो प्रकाशु थियो वई, अविद्या ऊंदहि कारी।
सत्‌गुर अहिड़ी प्रेम–प्यार जी, जोति जॻाई आ ।।
4. सिन्धुड़ीअ जो आहि भाॻु वरियो, अवतारु वठी गुरु आयो।
भाउर–भेनरूं गॾिजी सभई, गीत खुशीअ जा ॻायो।
नची–टपी ''मनोहर'' भी ॾाढी, मौज मचाई आ।।



## भजन–26

तर्ज: लाल दाना अनार दाना ...........

थलु: गीत ॻायो, गीत ॻायो, आयो गुरदेव मिली गीत ॻायो

1. सिन्धु देस जी धरती सूंहारी, तंहिंमें शाहजी भिट भाॻवारी।
भली ॼायो, भली ॼायो, स्वामी सर्वानन्द जिते भली ॼायो।।
2. ॿारहीं असूअ जी आई सुहानी, स्वामी सर्वानन्द आयो जीय जानी।
चंडु चायो, चंडु चायो,धरतीअ ते चोॾसि जो चन्डु चायो।।
3. विस्पति जो ॾींहुं आयो सदोरो, ईश्वरी माता झूले हिंदोरो।
सुखु पायो सुखु पायो, पिता शेवकराम सचो सुखु पायो।।
4. सत्‌गुर जी आ सुहिणी सूरत, मधुर ''मनोहर'' मुहिणी मूरत।
भाॻु ठाहियो भाॻु ठाहियो, करे दर्शनु पहिंजो भाॻु ठाहियो।।

## भजन–27

तर्ज: जींअ वणई तिंअं जप तूं राम ......

थलु: सत्‌गुर सर्वानन्द सुखरास, महिर करे ॾियो दर्शन सांई ।।

1. प्रेमी पुकारिनि तोखे सभेई, नंढा वॾा ऐं संत मिड़ेई।
तुंहिंजे दर ते कनि अरदास, महिर करे ॾियो दर्शन सांई।।
2. ॾींहं ॾींहं थी वरिह बि वियड़ा, कीन ॿुधाया वचन तो मिठड़ा।
वरी रचाए रिमझिम रास, महिर करे ॾियो .................. ।।
3. आसणु निहारे अडणु निहारिनि, अडणु निहारे आसणु निहारिनि।
ॾिसी सभेई थियनि उदास, महिर करे ............... ।।
4. ''नामो'' हर हर हृदो हारे, नेण निमाणा खणी निहारे।
प्रेमिनि जी कयो पूरी प्यास, महिर करे ................. ।।

## भजन–28

तर्ज – हर सन्तन जी, हर साधन जी ........

टेक : श्री स्वामी सर्वानन्द सदा, सत्संग करते हैं भारी।।

1. बंसी प्रेम बजाते हैं, मीठे वचन सुनाते हैं।
सत्संग रिमझिम लाते हैं, काटे अविद्या की जारी।।

2. गंगा तीर्थ जाते हैं, सहज समाधि लगाते हैं।
आतम आनन्द पाते हैं, लागत एकान्ती प्यारी।।

3. जीवन सफल बनाते हैं, सद्गुरु देव मनाते हैं।
गीत शिवोऽहम् गाते हैं, ''गोबिन्द'' जाऊं बलिहारी।।

## भजन–29

तर्जः हेरी मैं तो प्रेम दीवानी ........

टेकः मेरे स्वामी सर्वानन्द जी, ज्ञानी हैं गुणवान।
मुक्ती उक्ती भक्ती युक्ती, देवे हरि का ध्यान।।

1. मनुष जन्म को सफल बनाए, सत्संग का दे दान।
जो श्रद्धालू प्रेम से आए, करते तां कल्यान।।

2. ब्रह्म ज्ञानी अन्तर ध्यानी, देवे अभय का दान।
परम एकान्ती है सन्तोषी, गंगा करत स्नान।।

3. पूरण त्यागी है वैरागी, निष्कामी निर्मान।
''गोविन्द'' तांका दर्शन पाके, प्रेम का करले पान।।



## भजन–30

तर्जः दिन सारा गुजारा तेरे अंगना .......

टेकः स्वामी सर्वानन्द ज्ञानी, थे अन्तर आत्मध्यानी,
किया प्रेम से भजन ।।

1. किया सत्संग, चढ़े राम रंग, बोली अमृत जैसी बानी।
मीठे वचन सुनाके, दे प्रेम का सु पानी।
थे पूरण पर उपकारी, गुरु दाता दिल के उदारी।।

2. पुरुषार्थ, पर स्वार्थ, किया परमार्थ सुखदाई।
पावन दे सीख सेवा, भगवान हो सहाई।
थे पूरण सर्व त्यागी, जपे गुरु मन्त्र को जागी।।

3. गुरु दर्शन, करे प्रसन्न, मन तृष्णा मोह मिटाते।
सब बन्धनों को तोड़े, ममता सर्व हटाते।
थे ''गोबिन्द'' गुरु अवतारी, गुण ज्ञान वैराग विचारी।।

## भजन–31

तर्जः दिल लूटने वाले जादूगर ......

टेकः श्री सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी, रहते थे निष्काम सदा।
जती जोगी त्यागी सन्तोषी, धर ध्यान जपे गुरु नाम सदा।।

1. वीचारवान गुण शीलवान, मीठी बाणी बोले मुख से।
शुचि धैर्यवान थे दयावान, धरते थे ध्यान शान्ती सुख से।
सत्संग में लाते थे रिमझिम,जिस पीया प्रेम का जाम सदा।।

2. ऋषियों जैसी जिसकी बहनी, मुनियों जैसी जिसकी रहनी।
सन्तों जैसी जिसकी सहनी, ज्ञानियों जैसी जिसकी कहनी।
है चारों साधन सम दम आदिक, देखे रमता राम सदा।।

3. क्या ''गोविन्द'' कीरति गाइ सकूं,मैं पार न तांका पाय सकूं।
ना गुन तांका समुझाइ सकूं, जो मुख से खोल सुनाय सकूं।
दे प्रेम वालों को गुरु भक्ती, करे पूरन सबके काम सदा।।

## भजन–32

तर्जः जीया बेकरार है .........

टेकः सच्चे अवतार हैं, सबसे लेते सार हैं।
स्वामी सर्वानन्द जी, सर्व गुणनि भण्डार हैं।।

1. ईश्वरी सेवकराम जिसी के, मात पिता गुणवानी थे।
दोनों ने हरि भक्ति कमाई, अन्तर आत्म ध्यानी थे।।

2. सत्गुरु टेऊँराम की ज्योती, इसमें आय समाई जी।
एक ही सूरत एक ही मूरत, एक ही करत कमाई जी।।

3. द्वैत भाव नहिं राखत किससे, रहते हैं निष्काम सदा।
''गोविन्द'' ब्रह्म का ज्ञान सुनाते, देते हैं विश्राम सदा।।

## भजन–33

तर्जः जब तुम हीं चले परदेस .........

थलुः स्वामी सर्वानन्द गुणवान, सुखनि जी खाणि, आहिनि अवतारी।
जोगी शुभ गुण ब्रह्म विचारी ।।

1. माता जिनिजी ईश्वरी बाई हुई,
जंहिं कंहिंजी दिलि न दुखाई हुई।
पिता शेवकराम ज्ञानी हो सुखकारी।।

2. जेके ब्रह्म ज्ञान बुधाइनि था,
मन माया में न फसाइनि था।
सदा सैर करनि सैलानी धीरजधारी।।

3. वाणी मिठड़ी मुख सां उचारिनि था,
सम दृष्टीअ खे जे धारिनि था।
दुई शान्ती प्रेमिनि खे जहिं दिलड़ी ठारी।।

4. नित ''गोबिन्द'' जे निर्मान रहनि,
ऐं आए विए खे आदर दियनि।
उहे भगितीअ जा भण्डार वञां बलिहारी।।



## भजन–34

तर्ज मेरी छम छम बाजे ...........

टेक स्वामी सर्वानन्द जी आए है,
मेरे मन में आनन्द छाए है ।

1. बड़े भाग से सत्गुरु आय मिला,
बहुत जन्मों के भाग हामरे खुले।
आज दर्शन दिया, मोहि प्रसन्न किया।
मेरा जीवन सफल बनाए हैं।।

2. प्रेम प्याला गुरू ने पिलाया मुझे,
अविद्या निद्रा से आके जगाया मुझे।
था मैं दीनदुःखी, होया तन मन सुखी।
मैं तो अठसठ तीर्थ नहाए है।।

3. निज कर्म धर्म को सिखाय दिया,
कई जन्मों के पाप मिटाय लिया।
कृपा मुझ पर करी, आशा तृष्णा हरी।
ब्रह्म ज्ञान की बीन बजाएं हैं।।

4. क्या ''गोबिन्द'' गुरू की बड़ाई करूं।
गुरु चरणों का हृदय में ध्यान धरूं।
तोड़े बंधन सभी, होया निर्भय अभी।
मेरे सगले दूख मिटाए हैं।।

## भजन–35

तर्जः मुंहिंजी बेड़ी अथई विच सीर ते ...........

थलुः स्वामी सर्वानन्द सुजान हो, जहिं धरियो प्रभूअ जो ध्यान हो।

1. सैर करण आयो सैलानी, प्रेम भरी हुई जंहिंजी बाणी।
जंहिं सबखे कयो मस्तान हो।।

2. सत्संग जी जहिं कई बहारी, नाम नशे जी हुई खुमारी।
जेको निष्कामी निर्मान।।

3. सतगुर दर जो आयो स्वाली, मूरि न मोटियो कदहीं खाली।
जेको दीन्दो बह्म जो ज्ञान हो।।

4. ''गोविन्द'' कहिड़ी महिमा गायां, गाए तहिंजो पार न पायां।
जेको दीन बन्धू दयावान हो।।

## भजन–36

तर्जः मुंहिंजी बेड़ी अथई विच सीर ते ...

थलुः स्वामी सर्वानन्द सुजान हो, ज़ण धरतीअ ते भगवान हो।।

1. आये विये खे मान दिनाऊँ, दीननि खे पिण दान दिनाऊँ।
ज़णु सत्गुरु टेऊँराम हो।।

2. देश विदेश में नाम जपायो, श्याम सुन्दर ज्यां मस्त बणायो।
ज़णु गोप्युनि में घनश्यामु हो।।

3. संगति खे जंहिं ज्ञान दिनो हो, आत्म अमृत जाम दिनो हो।
कयो सभजो जंहिं कल्याण हो।।

4. रात दींहं सब रोअनि प्रेमी, चाहिनि था नितु दर्शन नेमी।
कन्दो सभ जा पूरन काम हो।

5. प्रेमी सभई पलउ पाराइनि, चवे "हंस" सब आश पुजाइनि।
ज़ण संगति लाइ श्रीराम हो।

## भजन–37

तर्जः दिल के अरमां आंसुओं में बह गये ...........

टेकः स्वामी सर्वानन्द का दरबार है,
जो भी आया उसका बेड़ा पार है।।

1. दर तो मैंने बहुत देखे हैं मगर।
तेरे दर की महिमा अपरम्पार है।।

2. दीन दुखियों की सुने फरियाद जो।
तेरा दर ही तो दया का द्वार है।।

3. जो भी आया दर पै खाली ना गया।
भर गई झोली भरा भण्डार है।।

4. लाखों की बिगड़ी बनाई इस द्वार ने।
मुझको भी इस दर का इक आधार है।।

5. तेरे दर का दास है "जयदेव" भी।
तेरे चरणों से ही जिसको प्यार है।।



## भजन–38

तर्ज घर आया मेरा परदेसी .........

थलु सत्गुरु सर्वानन्द दातारु, कलियुग में हुयड़ो अवतारु।।

1. सत्गुर जहिड़ो उपकारी, कोन दिठो बियो हितकारी।
ज्ञान गुणनि जो दे भण्डारु।।

2. सत्गुरु कामिलु स्वामी हो, सचु पचु अन्तर्यामी हो।
सन्तनि में सुहिणो सरदारु।।

3. कंहिंजी दिल न दुखाई हुई, सत्गुर तोड़ि निभाई हुई।
अहिड़े सत्गुर तां बलिहारु।।

4. अर्ज मुंहिंजो मंजूर कयो, दर्शन देई दुख दूरि कयो।
"जयदेव" खे तुंहिंजो आधारु।।

## भजन–39

तर्जः रेशमी सलवार कुर्त्ता जाली का ...........

टेकः स्वामी सर्वानन्द मौज मचाए व्यो।
रावल वांगुरू रंगु वाह जो रचाए व्यो।।

1. थ्यो नंढपण खां वैरागी, जंहिंजे जीअ में जिज्ञासा जागी।
वठी शरन गुरू टेऊँराम जी, बण्यो सालिक सन्त सुहागी।
जोग कमाए व्यो।।

2. करे शेवा गुरुअ जी पूरी, पाए कृपा तहिंजी समूरी।
मन मोह ममत खां मोड़े, वठी नजर नाम जी नूरी।
सची लिंव लाए व्यो।।

3. पोइ गुरु गादीअ ते वेही, नंगु सभ सां निभायो नेही।
गुरु भक्ति कमाई पूरन, तहिंजी गाल्हि कयां मां केही।
ज्योति जागाए व्यो।।

4. हुयो शुभ गुण सम्पन्न ज्ञानी, हुई जंहिं में क्षमा जी खानी।
सिंधु हिन्दु ऐं विदेशनि जो, करे सैरु बण्यो सैलानी।
प्रेम वधाए व्यो।।

5. हुयो शान्ति सबूरीअ वारो, वणयो जंहिंखे गंगा किनारो।
करे कोशिश पहिंजी पूरी, विधो सत्गुर जो आखाड़ो।
ध्यान लगाए व्यो।।

6. ठाहियो अमरापुर स्थानु, जयपुर में आलीशानु।
सतगुर जी समाधी मूरत, रखी ग्रन्थु ''भजन'' प्रधानु।
अटलु जसु पाए व्यो।।

## भजन–40

तर्जः दिल के अरमां ............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सन्त सुजान हो।
निर्मोही निष्काम ऐं निर्मानु हो।।

1. पूरणु जंहिंजी नीति ऐं मर्याद हुई,
सभिनी प्रेमिनि जी कई दिल शाद हुई।
प्रेम प्रकाशी मण्डल जो प्रधानु हो।।

2. ऋषिनि वारी जंहिंजी नितु रहिणी हुई,
संतनि वारी जंहिंजी नितु सहिणी हुई।
ब्रह्म ज्ञानिनि वारो जंहिं जो ज्ञानु हो।।

3. गुरुअ जी सेवा ऐं भगिती वियो करे,
ध्यान आत्म जो अन्दर में वियो धरे।
प्रेम जी साक्षात् मूरत महानु हो।।

4. सत्गुरु टेऊँराम जी सूरत बणी,
साखी–शिवोऽहम् जो वियो नारो हणी।
पातो पूरणु पदु ''भजन'' निर्बानु हो।।



## भजन–41

तर्जः जोति से जोति जगाते चलो...

टेकः जोति मा जोति जगाए वयो, स्वामी सर्वानन्द में समाए वयो

1. रहिणी कहिणी सागी आहे, सागियो ज्ञान बताएं
सत्संग जी थो मौज मचाए, प्रेमी मस्तु बगाए,
सत्नाम साक्षी जपाए वयो ....

2. मंड़िलियू ठाहे सैर करे थो, खाली झोलियूं भरे व्यो
शरणि में जेको अचे सवाली, तिनि जा दर्द हरे व्यो,
नाम जो जाप वजाऐ व्यो .....

3. बारहें महिनें मेलो लगाइ, ग्यान जी गंगा वहाइन
किथे किथे जा प्रेमी अचनि था, दर्शन सा दिलिडी ठारिनि
''वासदेव'' ग्रन्थ बणाऐ वयो .....

## भजन–42

तर्जः मेरे ख्वाजा का देखो नजारा ...........

टेकः स्वामी सर्वानन्द साधू सच्चारा, जिसकी महिमा सभी गा रहे हैं।
मेरे नयनों का था वो तारा ।।

1. थी वृती उसी की वैरागी,
जिसने सारी तमन्ना त्यागी।
किया सारे जगत से किनारा ।।

2. वह जोगी था जयपुर वाला,
और अनुभव उसी का था आला।
वह तो दुनिया से रहता था न्यारा।।

3. ऐसी बंसी उसी ने बजाई,
और सत्संग की रास रचाई।
था वो सारी संगत का सहारा ।।

4. ''शास्त्री'' भी है गुण गीत गाता,
है श्रद्धा के फूल चढ़ाता।
मेरा गुरुदेव प्राणों से प्यारा ।।

## भजन–43

तर्जः सत्संग जी हर रंग जी महिमा ..........

टेकः श्री स्वामी सर्वानन्द जी, सत्गुरु मेरा ज्ञानी था।
सतगुर मेरा ज्ञानी था, निर्मोही निर्मानी था।।

1. वृत्ती जिसकी थी वैरागी, जिसने सारी तमन्ना त्यागी।
आशिक था पूरा अनुरागी, आतम अन्तर ध्यानी था।।

2. मुख में जिसके मीठी बानी, प्रेम का जिसने पिलाया पानी।
राग जिसी का था रूहानी, ज्ञान गुणों की खानी था।।

3. बंसी प्रेम बजाई थी, सत्संग मौज मचाई थी।
रिमझिम रास रचाई थी, दिलबर मेरा दानी था।।

4. ''शास्त्री'' उनके गीत है गाता, श्रद्धा के है फूल चढ़ाता।
चरणों में नित शीश झुकाता, सत्गुरु वह सैलानी था।।

## भजन–44

तर्जः दाढी सत्गुरु जी सिक आहे ......

थलुः स्वामी सर्वानन्द खे सारियां।
नेण खणी मां तंहिंखे निहारियां।।

1. साजन सिक में व्यो त सिकाए, सभिनी खे व्यो सौज लगाए।
पल–पल तंहिं लाइ त पुकारियां ...........

2. सूरत जंहिंजी हुई त निमाणी, खिम्या गुणनि जी हो सो खाणी।
सत्गुरु खे सिक मां संभारियां ...........

3. सत्गुरु बिन मुंहिंजी कान सरे थी, गणितिन में हीअ जान गरे थी।
आबु अखियुनि मां हर हर हारियां ...........

4. ''शास्त्रीअ'' जे हो सिर जो साईं, याद करियां मां तंहिंखे सदाईं।
ध्यान तंहिंजो दिल में धारियां ...........



## भजन–45

तर्जः मैं रात भर न ............

थलुः सचे स्वामी सर्वानन्द तां,बलिहार मां वञां, सद्वार मां वञां।।

1. जानिब मुंहिंजो हो जानी, दिलि जो दरियाहु दानी।
निष्कामु हो नियारो, गुरुदेव मुंहिंजो ज्ञानी।
अहिड़े गुरू गोबिन्द तां, बलिहार मां वञां।।

2. जहिंजे मुख में मिठिड़ी बाणी, ऐं सुहिणी समुझाणी।
हो सादगीअ जी सूरत, क्षमा दया जी खाणी।
सभिनी जे दिलि पसन्द तां, बलिहार मां वञां।।

3. वृती जंहिंजी वैरागी, तपस्वी सचो हो त्यागी।
''शास्त्रीअ'' जे सुहिणे साजन, जपियो नाम हो त जागी।
अहिड़े आनन्द कन्द तां, बलिहार मां वञां।।

## भजन–46

तर्जः चान्द को देखो जी ............

थलुः सचो गुरु सर्वानन्द, हुयो सो आनन्द कन्द।
दाता दयालू, कामिल कृपालू गुरुदेव ज्ञानी हो।।

1. हुई विरती जहिंजी वैरागी, जपियो जानिब खे जंहिं जागी।
हो सचु पचु सुहिणो साजन, मुंहिंजो आशिक सो अनुरागी।
अहिड़ो मुंहिंजो दिलबर हो, सचो मुंहिंजो सतगुरु हो।
धीरजधारी, दिल जो उदारी, दरवेश दानी हो।।

2. हुई मुंह में जंहिंजे मणियाँ, ऐं कुरब वारी हुई कणियां।
जहिंजा बोल त मिठिड़ा मिठिड़ा, हर कहिं खे प्ये थे वणियां।
मिठिड़ी जहिंजी बाणी हुई, सुहिणी समुझाणी हुई।
कई जहिं कमाई, वाह जो जमाई, नरु निरमानी हो।।

3. हो मर्दु सचो मोचारो, ऐं भगितीअ जो भण्डारो।
हिन दुनियां में भली रहन्दे, रहियो सभिनी खां सो न्यारो।
सादी जंहिं जी रहिणी हुई, कुरब वारी कहिणी हुई।
प्रेम प्रकाशी, सब गुण रासी, ऐं सैलानी हो।।

4. मुहिंजो जोगी हो जयपुर वारो, कीअ नरु त हणी व्यो नारो।
"शास्त्रीअ" जे सिर जो सांई, हो संगत सजीअ जो सहारो।
अहिड़ो उपकारी हो, ब्रह्म वीचारी हो।
प्रीतम प्यारो, सजणु सचारो, लाल लासानी हो।।

## भजन–47

तर्जः यशोमति मैया से ............

थलुः अचो अजु सभेई, गदिजी गीत गायूं।
स्वामी सर्वानन्द जाओ, मौज मचायूं।।

1. असूअ जो महीनो बारीहं, तारीख प्यारी।
विस्पति जे दीन्हं सांईंअ, हुई देह धारी।
सुहिणो दिहाड़ो अजु, बेशक भायूं।।

2. माता ईश्वरी हुई, भागनिवारी।
जहिंजे गोद में आयो, सांईं सुखकारी।
पिता शेवकराम घर, वरियूं वाधायूं।।

3. स्वामी टेऊँराम पंहिंजी, कृपा कयड़ी।
पूरण गुरूअ जी दिसो, महिर थी वयड़ी।
मिली प्रेम सां अजु, जइ जइ मनायूं।।

4. "शास्त्री" बि वेठो अजु, ईहे गीत गाए।
श्रद्धा जा गुल वेठो, गुरनि ते चढ़ाए।
साईंअ सचे जा गदिजी, मंगल मनायूं।।

## भजन–48

तर्जः आ लौट के आजा मेरे मीत ............

थलुः मुहिंजो सतगुरु सर्वानन्द, सचो गुरुदेव ज्ञानी हो।
हुयो फेरु न जंहिं में फन्दु, जोगी मुंहिंजे जीअ जो जानी हो।।

1. सादी सूदी हुई रहिणी जहिंजी, मुख में मिठी पिण बाणी।
सन्तनि वारी सहिणी जहींमे, सुहिणी सन्दसि समुझाणी।
सांईं सभिनी खे हो पसन्दि, गायो जंहिं रागु रूहानी हो।।



2. भगितीअ सन्दो भण्डार हो स्वामी, वृत्ती जंहिंजी वैरागी।
दुनियां में रहन्दे भी हो नियारो, आशिक असुल अनुरागी।
निर्वेरी बणी निर्द्वन्दु, सजणु निहठो निरमानी हो।।

3. जोगीअ मुंहिंजे जयपुर वारे, मुरली मिठी त वजाई।
नेही निमाणे साजन मुहिंजे, सत्संग जी रास रचाई।
सचु पचु सो कृष्ण चन्दु, दयालू दिलबर दानी हो।।

4. "शास्त्री" सच्ची श्रद्धा ऐं प्रेम सां, गीत जंहिंजा प्यो गाए।
जोगीअ सचे जी जइ जइ मनाए, चरनन में सिरड़ो झुकाए।
मुंहिंजो अहिड़ो आनन्द कन्दु, सचो सतगुरु सैलानी हो।।

## भजन–49

तर्जः तुम रूठ के मत जाना ............

थलुः अजु दीन्हुं सुठो आयो।
हिन दीन्हं सदोरे ते, स्वामी सर्वानन्दु जायो।।

1. महिनो असूअ जो मोचारो, तारीख बारींहं ते।
अजु वरियो मुंहिंजो वारो ।।

2. हुई माता भागनि वारी, जहिंजी गोद में आयो अजु।
मुंहिंजो सांईं सुखकारी।।

3. अजु दीन्हुं सदोरो आ, माता ईश्वरीअ जे घरि।
अजु लुदियो हिन्दोरो आ।।

4. गीत "शास्त्री" गाए थो, गुरुदेव जे चरणनि में।
पंहिंजो सिरड़ो झुकाए थो।।

## भजन–50

तर्जः याद आ रही है ............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सचारो, दानी दयालू, दिलबर मुहिंजो,
मुहिब मिठो मोचारो।।

1. नन्ढपिण खां जहिं नामु जप्यो हो, विरती रखी वैरागी।
मोह ममत खे मन मां मेटे, तृष्णा तमन्ना त्यागी।
रहन्दे दुनियां में, दिलबर मुंहिंजो, नेही थी व्यो न्यारो।।
2. सुहिणी जंहिंजी, हुई समझाणी, मिठिड़ी मुरली वजाई।
साजन मुंहिंजे सत्संग जी हुई, सुन्दर रास रचाई।
मुहं में जंहिंजे हुयड़ी मणियां, संगत सजीअ जो सहारो।।
3. धीरज धारी पर उपकारी, क्षमा जी हो खाणी।
मान गुमान मिटाए मन मां, मूरत हुई निमाणी।
नेही सदा निष्काम बणी जंहिं, वाह जो वजायो वारो।।
4. जयपुर वारे जोगीअ जी मां, कहिड़ी महिमा गायां।
सिक श्रद्धा ऐं प्रेम सच्चे सां, गुल गीतन जा चढ़ायां।
''शास्त्रीअ'' जे हो सिर जो सांईं, प्रीतम मुहिंजो प्यारो।।

## भजन–51

तर्जः चमन में रहके वीराना...

टेकः सुहाना आज दिन आया, खुशी के गीत गायें हम।
स्वामी सर्वानन्द जी आये, उनकी जय जय बुलायें हम।।

1. गांव भिटशाह के भीतर, ईश्वरी माता के घर में ।
पधारे आज स्वामी जी, भाग्य उनके सराहें हम ।।
2. संवत् था उन्नीस सौ चौपन, सुन्दर था मास अश्विन का।
पक्ष भी शुक्ल था उज्वल, तिथी चौदस मनाएं हम।।
3. श्री टेऊँराम सत्गुरु से, पाया निज ज्ञान आत्म का।
लगन बचपन से लागी थी, सत्य सबको सुनाएं हम।।
4. संतों के बीच यों भाते, सितारों में शशी जैसे।
बड़ा ही सौम्य था दर्शन, सदा बलिहार जाएं हम ।।
5. ''शास्त्री'' की ओर से सबको, बधाई है बधाई है।
अंत में इन चरण कमलों, में अपना सिर झुकाएं हम।।



## भजन–52

तर्जः बिगड़ी मेरी बना दे ........

टेकः स्वामी सर्वानन्द सत्गुरु, मुझको तूं दे सहारा।
मुझको तूं दे सहारा, तूने सभी को तारा गुरुदेव तू हमारा।।

1. आया हूं तेरे दर पर बन करके मैं सवाली।
गुरुदेव मेरे पूरण छोड़ो न मुझको खाली।
जीवन की इस नैया को, दिखला दे तूं किनारा .....
2. संसार है अन्धेरा, अब रास्ता दिखा दे।
मेरे सूने मंदिर में, दीपक तू ही जगा दे।
मेरे जीवन का सतगुर, इक तू ही है आधारा .....
3. महिमा तेरी क्या गाऊं, मेरे जोगी जयपुर वाले।
दुनिया के झंझटों से, आकर मुझे बचाले।
अपना समझ के मैंने, पल पल तुम्हें पुकारा .....
4. तूने सभी के ऊपर, अपनी कृपा है धारी।
''शास्त्री'' भी तेरे दर पर, आया है बन भिखारी।
अपना मुझे बनाले, गुरुदेव प्राण प्यारा ....

## भजन–53

तर्जः दिल के अरमां ...........

टेकः मेरे सतगुरु स्वामी सर्वानन्द थे।
देते वो सबको सदा आनन्द थे।।

1. त्यागी वैरागी गुरू अनुरागी था।
हरते वो सबके सदा दुःख द्वन्द्व थे।।
2. भजन सत्संग से जिसी का प्यार था।
ऐसे सत्गुरु मेरे सबको पसंद थे।।
3. मुरली सत्संग की बजाई प्रेम से,
मेरे सत्गुरु मानो कृष्णचंद थे ।।
4. महिमा सत्गुरुदेव की मैं क्या लिखूं।
''शास्त्री'' गुरुदेव आनन्द कन्द थे।।

## भजन–54

तर्जः ज्योत से ज्योत ............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सुधीर अथव, ग्यान वान सो गंभीर अथव।

1. अंदर बाहर सादो सचलो, पूरण पर उपकारी।
मोह ममत जे बंधन खां, जिनजी विरती आहे न्यारी।
आशिक सो अकसीर अथव ।।

2. नंढ पण खां गुरु ज्ञान खे पाए, बणियो आतम ज्ञानी।
ख्याल बियनि खे खतम करे थ्यो, अंतर आतमध्यनी।
फुरने रहित फकीर अथव।।

3. हरदम मुख सां मिठड़ो बोले, गाए मिठड़ी बाणी।
छा साजन में सोज़ भरियल आ, ऐं पिण रागु रूहानी।
जणु काशीअ वारो कबीर अथव।।

4. परम विवेकी परम एकान्ती, ऐं पिण परम वैरागी।
योग कला में ''शास्त्री'' पूरण, चित जो पूरण त्यागी।
ज़ाहिर सो जिंद पीर अथव।।

## भजन–55

तर्जः इस रेशमी पाजेब की झनकार पै सदके .....

थलुः स्वामी सर्वानन्द तुंहिंजे नाम तां, सद्वार मां सदके।
दम–दम वञां दिलबर – तुंहिंजे दीदार तां सदके।।

1. रहियो संसार में साजन–कमल गुल जियां सदा न्यारो।
सज़ीअ हिन्द ऐ विलायत में, वज़ायो वाह जो तो वारो।
तो गम मेटिया सभिनी जा, मां गमटार तां सदके।।

2. रहंदे दुनिया में भी दिलबर – हुएं वृतिअ जो वैरागी।
माया जे मोह खे त्यागे – तमन्ना तृष्णा तो त्यागी।
तूं दानी दयालू दिलबर हुएं, दातार तां सदके।।



3. तुहिंजे मुख में मिठी बाणी, गायो तो रागु रूहानी।
कयो तो राज़ु हर दिल ते, हुएं जानिब तूं जीअ जानी।
तो प्यार दिनो प्रेमिनि खे, मां तंहिं प्यार तां सदके।।

4. ''शास्त्री'' भी सांईं सिक सां, तुहिंजा अज़ु गीत गाए पियो।
तुहिंजे चरणनि में सच्चा सतगुर, श्रद्धा जा गुल चढ़ाए पियो।
जा झलक दिठी मूं तुहिंजी, उन झलकार तां सदके।।

## भजन–56

तर्जः सख्यूं सेजा गुलनि सां सजायो .......

थलुः स्वामी सर्वानन्द हो सुजानी।
मुहिंजो जानिब हुयो जीअ जानी।।

1. हुयो त्यागी, ऐं वैरागी, जप्यो जगदीश खे जंहिं जागी।
गुरुदेव असांजो हो ज्ञानी।।

2. हुयो मिठो मनठार, हीएं जो हार, संगत सज़ीअ जो हुयो सींगार।
निर्मोही हुयो निर्मानी।।

3. जहिंजी मिठी बाणी, सुहिणी समझाणी,खिम्या गुण ज्ञान जी हो खाणी।
जहिं गायो हो रागु रूहानी।।

4. हुयो दयाधारी–जंहिंजी वृती न्यारी, प्रेमी पुरुष पर उपकारी।
मुहिंजो दिलबर, दिलावर हो दानी।।

5. हुयो गुरू गमटार, सभिनी जो आधार, ''शास्त्रीअ'' खे सांईं दाढो कंदो हो प्यार।
मुंहिंजो सत्गुरु हुयो सैलानी।।

## भजन–57

तर्ज जहां डाल डाल पर सोने की .....

थलु स्वामी सर्वानन्द सच्चे सत्गुर, कीअं कामिल कई कमाई।
मुंहिंजो साजन हो सुखदाई।।

1. हो सरल हृदय सादो सचलो, ऐं दिल जो दिलावर दानी।
जंहिं मोह ममत खे मिटाए छदियो, निर्वैर हुयो निर्मानी।
कीअं मनड़ो मोहियो माण्हुनि जो, ऐं मस्त थी मौज मचाई।।

2. नंढपिण खां नाम जपियो जहिं हो, रखी वृती पंहिंजी वैरागी।
तृष्णा तमन्ना जो त्याग करे, ही तालिब बणियो त्यागी।
कीयं सत्संग जी सुहिणे साजन, हुई रिम झिम रास रचाई।।
3. हो मोहन मिठो मनठार मुहिंजो,जंहिंजे मुख में मिठड़ी वाणी।
हो साजन सुहिणो सदा सियाणो, सौली हुई समझाणी।
कीयं ज्ञानी सचे गुरुदेव मुंहिंजे, हुई मुरली मिठी वजाई।।
4. जेके भी आया शरण में, तंहिंजा अवगुण कीन दिठाई।
करे कृपा नजर पंहिंजी सत्गुर, सभिनी जो ढकु त ढकियाईं।
मुंहिंजे दिलबर दाता, कदहिं न कंहिंजी, दिलड़ी हुई दुखाई।।
5. जण ईश्वर जो अवतार हुयो, गुरुदेव त मुंहिंजो ज्ञानी।
जंहिंजी रहिणी राहत वारी हुई, ऐं साजन हो सैलानी।
अज ''शास्त्रीअ'' भी सिक श्रद्धा सां, आ महिमा जंहिंजी गाई।।

## भजन–58

तर्जः छिप गया कोई रे, दूर से पुकार के .....
थलुः कहिड़ी मां महिमा गायां, संत सच्चारे जी।
दर्वेश दाता स्वामी, सर्वानन्द प्यारे जी।।
1. सत्संग जी मौज मचाई, खलिकत हुई मस्तु बणाई।
सत्नाम साक्षी जपाए, सुहिणी थे शिक्षा सुणाई।
कहिड़ी मां साख सुणायां, प्रीतम प्यारे जी।।
2. निष्कामी हो निर्मानी, आत्म ग्यानी ध्यानी।
संतनि में हो सोभारो, परमेश्वर जो हो प्यारो।
कहिड़ी मां गाल्हि सुणायां, दानी दुलारे जी।।
3. वाह–वाह जो मंडल मचाया, सचा उपदेश सुणाया।
कृपा धारे प्रेमिनि ते, सभ जा कया लाया सजाया।
कहिणी मां बाणी बुधायां, जीय जे जिआरे जी।।
4. हुयो सुन्दर सुहिणी सूरत, मन जी हुयो मुहिणी मूरत।
वाह–वाह जो ज्ञान बुधायो, नालो तो अमर बणायो।
''हरि ओम'' ते बाझ रहन्दी, सत्गुरु सूंहारे जी।।



## भजन–59

तर्जः सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो .........
टेकः सुनो प्यारे श्रद्धा धारे, सत्गुरु सर्वानन्द कहानी।
जिसके श्रवण मनन करन से, होवे सब दुःख हानी।।

1. सिन्ध देश में शाह भिट्ट था, अद्भुत इक स्थाना।
वहां बिराजे गृही योगी, ईश्वरी सेवकरामा।
सन्त कृपा से जन्म लिया था, सर्वानन्द सुखधामा।
चारों तरफ भई खुशहाली, गगन भई मृदुबानी।।

2. स्वामी गुरुमुखदास के संग में, आये सत्गुरु पासा।
सत्गुरु टेऊँराम ज्ञान से, किए भ्रम सब नासा।
घर को त्यागा मन में जागी, प्रभू मिलन की प्यासा।
सेवा स्मरण सत्संग से ही, मेटी कर्म की कानी।।

3. सिंध देश से आकर हिन्द में, अमरापुर बनवाई।
शहर शहर में सन्तों से मिल, गुरु की महिमा गाई।
मधुर वचन कह श्रेष्ठ कर्म से, धर्म की राह बताई।
गुरु की वाणी संग्रह करके, ग्रन्थ बना सुखदानी।।

4. देश विदेश में भ्रमण करके, नाम की ज्योति जगाई।
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाकर, तृष्णा ममत मिटाई।
तन मन धन और वाणी द्वारा, गुरु भक्ती चित लाई।
महिमा तिन की गाइ सके ना, नारद शारद ज्ञानी।।

5. मां कृष्णा की सन्त सेव से, इसी धरा पर आये।
पूर्व जन्म के श्रेष्ठ कर्म से, टेऊँराम गुरु पाये।
घर को त्याग बने वैरागी, मन को प्रभु से लाये।
सूरत मूरत मोहन लागी, अद्भुत अलख निशानी।।

24

## भजन–60

तर्जः सद्‌गुरु टेऊँराम तेरी, मैंने देखी महान शक्ती....

टेकः सद्‌गुरु सर्वानन्द तेरी, पूर्ण थी गुरु भक्ति महाना।।

1. गुरु मूरत में ध्यान लगाया, तांको इष्ट बनाया।
   गुरु सम होया रूप तुम्हारा, देखा प्रत्यक्ष जग प्रमाना।।
2. गुरु बिन कोई नाहिं सहारा, ऐसा निश्चय कीना।
   जो कुछ चाहा गुरु से मांगा, औरों से नहिं मांगा दाना।।
3. कण कण माहीं हरदम देखा, पूरण सत्‌गुरु प्यारा।
   कीना सबको प्यार अपारा, सबमें गुरु का रूप पछाना।।
4. गुरु आज्ञा को सिर पर धारा, कीना नहिं अभिमाना।
   आलस गफ़लत सर्व त्यागे, सहिया हरपल मान अपमाना।।
5. अपने को कब नाहिं लखाया, गुरु को प्रगट कीना।
   गुरु महाराज भला करेंगे, ऐसा निज मुख सदा बखाना।।

## भजन–61

तर्जः जाने चले जाते हैं, कहां इस दुनिया से ......

टेकः मेरे सत्‌गुरु सर्वानन्द जी, कर दो हम पर भी कृपा।
मैं आया शरण में तेरी, मुझको अपना नाम जपा।।

1. तेरे भक्तों ने तुझको पुकारा, सुनो विनती सत्‌कर्तारा।
   आओ दीनों के सहारे, आओ अखियों के तारे।
   आकर काटो यम फन्द जी।।
2. तेरे जैसा न को हितकारी, मैंने देखा जगत मंझारी।
   मेरे मात–पिता भी तुम हो, मेरे इष्ट गुरू भी तुम हो।
   ज्यो राधा के कृष्ण चन्द जी।।
3. अपने सत्‌गुरु को तुमने रिझाया,करके भक्ती प्रभू को पाया।
   दातार न तुझसा होगा, और दीन न मुझसा होगा।
   तुम हो सदा आनन्द कन्द जी।।
4. मेरे तुम ही हो एक सहारे, आजा प्रभू प्राण प्यारे।
   आप ही जीवन के आधारे, आप हो दिल के राज दुलारे।
   ज्यों सीता के रामचन्द जी।।



## भजन–62

तर्जः चमन में रहके .......

टेकः शिरोमणि सन्त सर्वानन्द, सर्व आनन्द करते हैं।
शरन जो भक्त आते हैं, उन्हे के भाग भरते हैं।।

1. नजर कृपा कटाक्ष से वे, शिष्यों के कष्ट हरते हैं।
   दया के समझो सागर हैं, दया के हाथ धरते हैं।।
2. सदा शुभ कर्मों के साधन, शिक्षा मन से उचरते हैं।
   ''श्री सत्‌नाम साक्षी'' जो, जपे सो भव से तरते हैं।।
3. यही भव सिन्ध में मल्लाह, भुजा आकर पकड़ते हैं।
   ''लालानारायण'' जो समझे, वो जन्मे हैं न मरते हैं।।

## भजन–63

तर्जः ऐ मेरे वतन के लोगो

टेकः स्वामी टेऊँराम की ज्योती, स्वामी सर्वानन्द में समाई।
वही हस्ती, भक्ती, शक्ती, सब गुणीजनों ने गाई।।

1. वही रेत ही रेत के ऊपर, देखो अमरापुर है बनाई।
   वही प्रेम प्रकाशी ध्वजा, है ऊंची कर लहराई।
   वही हरी भरी हरियाली, देखो फुलवाड़ी है लगाई।।
2. देखो सत्संग की फुलवाड़ी, सब सन्त फूल बन आए।
   उन फूलों पर सत्संगी, आये भंवरे रिमझिम लाए।
   सुन राम नाम की धुन्नी, है मन खुशी समाई।।
3. वही प्रेम प्रकाशी मण्डल, प्रचार प्रेम का करते।
   वही ब्रह्मज्ञान बताकर, मन सब लोगों का हरते।
   सब श्रद्धा वाले मिलकर, आते हैं बहनें भाई।।
4. वही भोजन का भण्डारा, सब आकर के पाते हैं।
   वही चैत्र मास की महिमा, सब आकर के गाते हैं।
   वही मन्दिर ''लाला नारायण'', जहां बैठ के शांती पाई।।

25

## भजन–64

तर्जः नील गगन के तले ...........

टेकः स्वामी सर्वानन्द, देते थे आनन्द ।
सुन्दर सूरत मनोहर मूरत, मुस्काए मंद मंद ।

1. सभा के बीच में ऐसे शोभत, ज्यों तारों में चंद ।।

2. नाम जपाते ज्ञान सुनाते, ज्यों निर्मल गुण गंग।।

3. ''लाला नारायण'' राम रसायण, प्रेम उन्हे है पसन्द।।

## भजन–65

तर्जः अथई सत्संग शान्ती पाइण लइ ..........

थलुः अचु अमरापुर दे पेर भरे,
स्वामी सर्वानन्द जिते महिर करे।

1. राणल जी रहणी न्यारी आ,
जिअं भोलानाथ भंडारी आ।
जेको दिल जो संतु उदारी आ,
थो सभ ते महिर जी नज़र धरे ।।

2. जंहिंजी प्रेम जी रचियल बाणी आ,
जंहिं में ज्ञान संदी समझाणी आ ।
जिअं गंगा जो निर्मल पाणी आ,
जंहिंजे पढ़ण सां बेड़ो पार तरे।।

3. सांईं दास ''किशन'' जो प्यारो आ,
ऐं संगत सजीअ जो सहारो आ।
मुंहिंजो दाता धीरज वारो आ,
जंहिंजे दर्शन सां थी दिलड़ी ठरे।।



## भजन–66

तर्जः भूली बिसरी एक कहानी ............

थलुः सत्गुरु सर्वानन्द स्वामी – देह धरे आयो अन्तर्यामी।।

1. नजदीक आहे न दूर, सदाजे कंदें – दींदई, सदड़ो जरूर।
गरज न दींदई कंहिंजी गुलामी।।

2. मुंह में हुई जहिंजे मणिया, वचन चयऊँ जे, सभखे वणिया।
सोरहां शिक्षाऊं मोक्ष मुदामी।।

3. राम जे रंग में रतल, भाव भजन में जंहिंजो मनड़ो भिनल।
दास ''किशन'' सां हरदम हामी।।

## भजन–67

तर्जः मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ........

थलुः स्वामी सर्वानन्द जी, सदा जैकार आ।
जंहिंजो जनम दींहं, विस्पति जो वार आ।।

1. स्वामी सर्वानन्द आयो धरे अवतार आ।
दीनन दुखियन ऐं, अड़ियन आधार आ।।

2. स्वामी सर्वानन्द जी, महिमा अपार आ।
जयपुर जे जोगीअ जो, नालो निर्वार आ।।

3. स्वामी सर्वानन्द सदा, दीननि दातार आ।
भोजन भजन जो, खोल्यो भंडार आ।।

4. स्वामी सर्वानन्द जी, सुहिणी दरबार आ।
गोकुल बिन्द्राबन, सागी हरिद्वार आ।।

5. स्वामी सर्वानन्द थियो, जंहिंजो रखवार आ।
लोकन टिन्हीं में तंहिंजो, विंगो थ्यो न वार आ।।

6. स्वामी सर्वानन्द जो, वदो उपकार आ।
मिल्यो ''किशन'' खे, तंहिंजो दीदार आ।।

## भजन–68

तर्जः अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का .........

थलुः स्वामी सर्वानन्द दाढो महिरबान आ,
बिरज बिहारी साग्यो भगवानु आ।

1. स्वामी सर्वानन्द जी सूरत सुहानी आ,
महिमा कहिड़ी गायां आयो, नूर ही नूरानी आ।
मुंहं ते दिसो जंहिंजे मुस्कान आ।।

2. आये विये खे जंहिं टुकिड़ी खाराई आ,
मथां महिर वारी जंहिं नजर घुमाई आ।
मोटियो न खाली जितां महिमानु आ।।

3. दुनियां चवे थी ईहो मोहन मुरारी आ,
मू लाइ ''किशन'' आयो भोलो ही भण्डारी आ।
दाता दयालू दाढो दयावान आ।

## भजन–69

तर्जः अथई सत्संगु शान्ती पाइण ..............

थलुः स्वामी सर्वानन्द फकीर अथव ।
जण काशीअ में को कबीर अथव।।

1. स्वामी ज्ञान गुणनि जी खाणी आ,
मिठी मूरत मधुर निमाणी आ।
साईं माण हूंदे निर्मानी आ,
मुंहिंजो साजन संत सुधीर अथव।।

2. स्वामी प्रेम जी सचुपचु मूरत आ,
सागी गुरु नानिक जी सूरत आ।
वरी न्याज़ नम्रता निविड़त आ,
सागियो जोतिनि वारो ज़िन्दह पीर अथव।।



3. स्वामी शंकर जियां जटाधारी आ,
ऐं सचुपचु भोलो भंडारी आ।
ज्ञानी ध्यानी धीरजधारी आ,
जणु अयोध्या में रघुवीर अथव।।

4. ''परमानन्द'' थो साफ सुणायां मां,
ऐं गीत गुरनि जा गायां मां ।
हिन दर ते सिरड़ो झुकायां मां,
गुरदेव असां जो गंभीर अथव ।।

## भजन–70

तर्जः दिन सारा गुजारा तेरा अंगना ..............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सबाझा, आहियो संत शिरोमणी राजा,
कयो महिर जी नज़र, कयो महिर जी नज़र ।।

1. दियो शक्ती मिले भगिती, सदा चरनन जो ध्यान धारियां।
चरनन जी भेट में मां, तन मन ऐं धन बि वारियां।
मिल जनम जनम में दरशन, करे दर्शन दिल थिए परसन।।

2. तव्हीं सागर मां मछली, मां जीयां दिसी तव्हां खे।
दर तां धिकीं न मूंखे, लारे लगस अव्हां जे।
ईहा पकी प्रीति जी दोरी, छिनी छदियो न नींह जी नोड़ी।।

3. तव्हीं गुलशन मां माली, मुंहिंजी हरी भरी फुलवाड़ी।
करे कुर्ब हिन किनीअ सां, पवित्र कजो पछाड़ी।
मूं में अवगुण अथव हज़ारा, तव्हीं गुणन संदा भंडारा।।

4. तव्हीं बन बन मां हरणी, मां पलजां अव्हां जे साये।
हरदम तव्हां जो आसरो, बे कंहिंजो मूंखे नाहे।
कजो ''परमानंद'' ते थोरो, मुंहिंजो फोलिजि कीनकी फ़ोरो।।

## भजन–71

तर्ज: ये दो दीवाने दिल के .....

थलुः स्वामी सर्वानन्द, सुखनि जी आ खाणी,
करे दिसु करे दिसु, तूं दर्शनु हली।।

1. स्वामी टेऊँराम जी कृपा थी वई, जोति मंझां कींअं जोति जगी वई।
उहाई सागी भक्ती, उहाई सागी शक्ती ।।

2. सागी उहाई संगति अचे थी, सत्संग जी पिणि रंगति रचे थी।
उहेई कहाणियूं, उहेई रिहाणियूं।।

3. सागियो सभिनि सां प्रेम निभाइनि, वदिड़नि वारो नेम निभाइनि।
सबुरु उहो सागियो – शुकुरु उहो सागियो।।

4. सागियो हले थो भरयल भंडारो, सागियो वजे थो नर जो नंगारो।
हलति उहा सागी, चलति उहा सागी।।

5. ''परमानन्द'' सां प्यारु उहोई, आदर ऐं सत्कारु उहोई।
उहाई सागी सूरत, उहाई सागी मूरत।।

## भजन–72

तर्ज: ये मर्द बड़े ............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सचारा, भगतीअ जा भंडारा।
जुग जुग जियें शाल, जग जा जियारा।।

1. सत्संग जो दीपक बारे, जग में कयव रोशनाई।
प्रेमिनि जा पाप धोई, मेट्या मन जी मंदाई।
प्रेम प्रकाशी मंडल वधाए, मेटियव मन मूंझारा।।

2. उपदेशी अमृत पियारे, ततल दिलिनि खे ठारे।
निर्भय कयव श्रद्धालू, आवागमन खे टारे।
मोह ममत जा बन्धन काट्यव, चौरासीय जा जारा।।





3. मंतर सत्नाम साखी, मिठो आहि जहिड़ो माखी।
दुनिया जा सभु सुख देई, हिन जग जो थ्ये थो राखी।
लहरि न लोदो तिनिखे जिनिखे संतन जा त सहारा।।

4. गुरमुखदास गडु थो गाए, ''परमानन्द'' मौज मचाए।
राज़ी करे सभिनी, खै दंडे मां छेरि वजाए।
रिमझिम लाए सत्संग में करे, वचननि जा वसिकारा।।

## भजन–73

तर्ज: तेरे प्यार का आसरा .......

थलुः स्वामी सर्वानन्द साहिब, सुखनि जी आ खाणी।
सबुर ऐं शुकुर जी, मूरत निमाणी।।

1. सूंहे थो सभा में, जींएं चण्डु गगन में।
सदा गुल गुलाबी जींअं, चमिके चमन में।
सचाई दिठी मूं, सदुंसि हर सुखुन में।
कयईं थे कथनु जदहिं, वेदनु जी वाणी।।

2. उपदेश दियण जा थनि, नमूना निराला।
प्रेमिनि खे प्यारिनि, भरे ज्ञान प्याला।
पीअण सां उन्हनि जा, अन्दर थ्या उजाला।
गाइनि प्रेम सां था, अमरापुरि जी बाणी।।

3. सदा तिनजी वृती, रतल राम रंग में।
रह्या जोग जुगितीअ, अलख जे उमंग में।
कमल गुल जां न्यारा, निर्लेप जग में।
इहा रीति सुहिणी, संदनि आ साधाणी।।

4. ''परमानन्द'' प्रेमिनि खे, इहेई आशाऊं।
कयूं अर्जु मालिक खे, बधी बेई बाहूं।
धणीअ दर सभेई, घुरूँ था दुआऊं।
लखें साल लालण, माणी शाल जवानी।।

## भजन–74

तर्जः ये परदा हटा दो ..................

थलुः हो सन्तनि में सोभारो, स्वामी सर्वानन्द प्यारो।
का विरले माउ जणीन्दी अहिड़ो, पुटड़ो भागनि वारो।।

1. नंढ़पण खां सन्तनि जे संग में, लाल बणियो लासानी।
स्वामी टेऊंराम जी कृपा सां सो, गोहर बणियो ज्ञानी।
हो हिन्द सिन्ध में हाकारो।।

2. सभ ग्रन्थनि जो ज्ञाता हुयड़ो, मिठिड़ी जंहिंजी बाणी।
साध संगति में दीन्दो हो सो, ज्ञान सन्दी समुझाणी।।
हुयो ज्ञान गुणनि जो भण्डारो।।

3. हरिश्चन्द्र ज्यां दानी हुयड़ो, स्वाली वयो न खाली।
सिन्धुड़ीअ जे सन्तनि में सचु पचु, सूरत हुई निराली।
को जाणे जाणणि वारो।।

4. ''परमानन्द'' भगत बी तुंहिंजे, दरते सीस झुकाए।
भगतीअ जो थो दान घुरे इहा, वेठो आस लगाए।
तहिंजो वारिसु वराईंन्दो वारो।।

## भजन–75

तर्जः सखी सेजा गुलनि जी सजायो ....

थलुः स्वामी सर्वानन्द सोभारो ।
मुंहिंजो सत्‌गुरु अथव कुर्ब वारो।।

1. अचनि दर ते सवें सुवाली,
वञनि मोटी ना कदुहिं खाली।
आहे भरियल साईंअ जो भण्डारो।।

2. सुहिणो सांईअ जो आहे मन्दर
अची जेको बि दिसे अन्दर।
तहिंजो अन्दरु थिए थो उज्यारो।।



3. आहे ज्ञानी दाता दानी,
सचो साईं आ गुणवानी।
कहे दुखड़ा वराए थो वारो।।

4. ''मोती'' जंहिंजो बि आहे विश्वास,
करे तंहिंजा थो सभ कम रास।
आहे सारीअ संगत जो सहारो।।

## भजन–76

तर्जः करती हूं तुम्हारा व्रत मैं .......

थलुः स्वामी सर्वानन्द प्यारो, अवतार व्यो बणी ।
करणी करे वियो कामिल, करतार व्यो बणी ।।

1. सभिनी चयो आ सतगुर, हो पारसमणिअ वांगे।
अवतार धरे सभिनी खे, दिनो दान मन मांगे।
हो सन्त सचो सो साजन, गमटार व्यो बणी।।

2. सुवाली न मोटिया खाली, जेके बि शरण आया।
थे दुखड़ा कटियाऊं तिनिजा, थिया लाया सजाया।
मुहताजनि मिस्कीननि जो, आधार व्यो बणी।।

3. हुई सूरत जंहिंजी सुन्दर, ऐं सुहिणी सोभ्यावान।
मुंह में मणिया हुई अहिड़ी, जीअं शंकर हो भगवान।
हुयो मुहिबु मिठो माखीअ खां, मनठार व्यो बणी।।

4. ''मोती'' करियां छा वर्णन, सन्तन जी वदियाई।
पीढ़ियुनि खां गादी जंहिंजी, सचु हलन्दी आहि आई।
भगिती जुगितीअ में भरियल, भण्डार व्यो बणी।।

## भजन–77

तर्ज सोमवार को हम मिले .....

थलु स्वामी सर्वानन्द हुयो, साधू संत महान।
करणी करे वियो कामिल थी, गुणी वदो गुणवान।।
तंहिंजे करे थी पूजे दुनियां, करे थी जै जैकार।
स्वामी टेऊँराम संदो जण, सागियो हो अवतार।।

1. नंढपिण खां ई नाम जपे वियो, वाह जी करे कमाई।
सतगुर जी शेवा में तो हुई – जीवनि सफल बणाई।
नियाज नम्रता रखी वियो आ, जीते ही संसार ।।

2. अञां तव्हांजी हुई जरूरत, साध संगति खे साईं।
देह छदे विया हिन दुनिया मां, यादि त रहंदी सदाईं।
केरु चवे थो आशिक मरन्दा, नालो आ निर्वार।।

3. शांतिप्रकाश बि सागी सूरत, संत आहे सुबहानी।
सागी रहिणी कहिणी "मोती", लाल आहे लासानी।
जुग जुग जीयंदा शाल सदाईं, छोन वञां बलहार।।

## भजन–78

तर्जः आदमी मुसाफिर है ..........

थलुः स्वामी सर्वानन्द सचो, दर्वेश दानी हो।
आयो अवतार धरे – सजण सूरत सुबहानी हो।।

1. सत्गुर संदी तो शेवा कमाई, रहिमत हुई का तो ते इलाही।
समधो जगत खे जहिं फानी हो ।।

2. विसिरे नथी तुंहिंजी कुर्बनि कहाणी, आहे सभिनी खे नेणनि में पाणी।
नूर अखियुनि जो नूरानी हो।।

3. प्रेमी सभई था तोखे संभारिनि, यादि करे तुंहिंजूं राहूं निहारिनि।
निछो निमाणो निर्मानी हो।।

4. तो बिनु अधूरा आहिनि ही मेला, तो रीय लगनि था मेला अकेला ।
लालु सभिनि में लासानी हो।।



5. प्रेम प्रकाशी मंडल वधाए, अमरापुर जो अस्थान ठाहे ।
सैर कयो तो सैलानी हो ।।

6. जोति मझां विया जोतियूं जगाए, शांतिप्रकाश पियो गादी वसाए।
"मोती" गुणनि में गुणवानी हो।।

## भजन–79

तर्जः होठों से छूलो तुम ..............

थलुः स्वामी सर्वानन्द सतगुर, दर्वेश दुलारो हो।
सिंधुड़ीअ जो संत सचो, मुंहिंजो प्रीतम प्यारो हो।।

1. हुयो दानिनि में दानी, गुरुदेव मुंहिंजो ज्ञानी।
बोले मुख सां मिठी बाणी, गायो रागु थे रूहानी।
कहिड़ी महिमा संदनि गायां, जोगी जीअ जो जीआरो हो।।

2. हुई मुंहं में संदनि मणिया, थे सभ कंहिंखे वणिया।
धन माता ईश्वरी हुई, जंहिं अहिड़ा लाल जणिया।
हुई मुश्क संदनि मुख में, मोहियो मुल्क त सारो हो।।

3. अची जयपुर में जोगीअ, सुहिणो मन्दर बणायो हो।
करे सत्संग जी वर्खा, दाढो आनन्द छायो हो।
मेलो चेट संदो लाए – खोल्यो अखण्डु भण्डारो हो।।

4. सुहिणे सत्गुर खे सारे, करे याद दुनिया सारी।
करे दर्शन सत्गुर जो, खुश थ्या थे नर नारी।
जोगी जयपुर जो "मूला", प्रेमिनि जो प्यारो हो।।

## भजन–80

तर्जः कभी गम से दिल लगाया ....

थलुः ओ सर्वानन्द सांईं, करि महिर तूं सदाईं।
तो बिन न वाह बी का, हिकु तूं वसीलो आहीं।।

1. दाता तुंहिंजो द्वारो, आहे सुर्ग खां का सूहारो।
आनंदु अचे थो न्यारो, कुलु कष्ट थो मिटाईं।।

2. रखी सिक सची सचारा, मतलब पाइनि था सारा।
मेटे मिड़ई मूंझारा, बिगिड़ी सदा बणाईं।।

30

3. शक्ती तुंहिंजी आ जाहिरु, आंहीं सदा तूं हाजिरु।
तुहिंजो आहियां मां नौकरु, चरननि में शल वसाईं।।
4. हीउ ''श्यामु'' थई निमाणो, तुंहिंजे दर ते आ विकाणो
दाढो अथई अयाणो, मतां तहिंखे ठुकराईं ।।

## भजन–81

तर्जः लाल दाना अनार दाना ......
थलुः बलहारी, वञां बलहारी। सतिगुरु सर्वानन्द तां वञां, बलहारी।।
1. सतिगुरु मुंहिंजो परम् वैरागी–ब्रह्मज्ञानी पूरन त्यागी।
अवतारी, अवतारी, सतिगुरु सर्वानन्द आहे, अवतारी...बलहारी।।
2. गंगा मैया जे वेही किनारे–भक्ती कई गुरुदेव प्यारे–प्यारे।
उपकारी, पर उपकारी, सतिगुरु सर्वानन्द पर उपकारी, बलिहारी।।
3. सत्संग जी अहिड़ी मौज मचाई, श्याम सुन्दर जीअ बन्सी वजाई।
सुखकारी–सुखकारी–सतिगुरु, सर्वानन्द आहे सुखकारी.. बलिहारी।।
4. प्रेम प्रकाश मण्डल खे वधायो, ''नारायण'' वैर विरोध – मिटायो।
फुलवारी – शंकर फुलवारी, वसन्दी रहे तुंहिंजी फुलवारी – बलिहारी।।

## भजन–82

तर्जः नाले अलख जे बेडो तार मुहिंजो .......
थलुः अमर नालो तुंहिंजो, अमर आ कमाई ।
अमर याद तुंहिंजी, सर्वानन्द सांईं।।
1. जपियई नाम जागी, जीअं शुकदेव त्यागी।
कमल गुल जियां जग में, रही थियो वैरागी।
वसाए तो गुलशन, सुगंधी फैलाई।।
2. जीवन हो सादो, जीअं बापू हो गांधी।
वीचार उज्ज्वल जीअं, चमके पई चान्दी।
रहणी ऐं कहणी, तो में सचाई।।



3. विरलो को अहिड़ो, हून्दो ज्ञानी।
मिलन्दो को मुश्किल, अहिड़ो निर्मानी।
सूरत हुई सुहिणी, जीअं कृष्ण कन्हाई।।
4. इतिहास साक्षी, अमर आ कहाणी।
गंगा ऐं जमुना में, जल जेसीं ताणीं।
ब्रह्मा ''शंकर'' जय, ''नारायण''मनाई।।

## भजन–83

तर्जः हम तो चले परदेस ...........
थलुः दिलबर हो दिलदार, मुहिब मिठो मनठार हो।
स्वामी सर्वानन्द संगत जो सींगार हो।।
1. उतरी सघे ना कंहिंजे दिलि तां, मन मोहींदड़ मुहिणी मूरत।
कीअं विसारियां अहिड़े सत्गुर, जी मां सुहिणी सूरत।
सूंह भरियो सरदार, मुहिबु मिठो ...........।।
2. कहिड़ी लिखां मां तंहिंजी वदाई,हू दरवेश हो सभ खां न्यारो।
जंहिं जंहिं ओट वती सत्गुर जी, तंहिं खे मिल्यो सहारो।
अड़ियनि जो आधार, मुहिब मिठो ...........।।
3. पाण जपे ऐं ब्रियनि खे जपाए, सन्त करे व्या अमर कमाई।
मिठिड़नि मिठिड़नि वचननि सां जंहिं सभ जी दिलि चोराई।
भगितीअ जो भण्डार, मुहिब मिठो ...........।।
4. निर्मल बाणी मुख सां बोले, जंहिं दुनियां में नामु कमायो।
पंहिंजे सतगुरु टेऊँराम जो, हर हन्धि जसु फैलायो।
दानी हो दातार, मुहिब मिठो ...........।।
5. जिनि भी प्रेमियुनि जोड़ियो नातो, तंहिं सत्गुरु खे साफ सुञातो।
''वीरभान'' सो भागनि वारो, जंहिं सत्गुर खे जातो।
ज्ञानी हो गमटार, मुहिब मिठो ...........।।

## भजन–84

थलुः ओ संगत जा जीअ जिआरा............
छो भुलजी विएं, सत्गुरु सर्वानन्द प्यारा
छो भुलजी विएं ..............

1. वाटुनि ते वर वर वाझायां, नेण विछांयां।
घाटनि ते थी पंध पुछायां, कांग उड़ायां।
रोज तक्यिां गंगा जी धारा।।

2. वहमनि दिल खे आहे वरायो, मनु घबरायो।
मुंहिंजो सत्गुरु अञा न आयो, घारीअ घायो।
गुजिरिया ऊन्हारा ऐं सियारा।।

3. कींअ विसारियां, रूह रिहाणियूं कुर्ब कहाणियूं।
आशूं वेचारियूं कूमाणियूं, हंज विहाणियूं।
हार हिये जा प्रीतम प्यारा।।

4. नेण खणी प्रेमी बादाइनि, खाजु न खाइनि।
सत्गुर सत्गुर जी रट लाइन, वेतर वाइनि।
प्रेमिनि जे नेणनि जा तारा।।

## भजन–85

तर्जः घर आया मेरा परदेसी .....
थलुः सतगुरु सर्वानन्द धन धन, देई दर्शन कंदा मन प्रसन्न।

1. मण्डली वठी था अचनि सैलानी, दूर करिनि से मन जी हैरानी।
आदि असुल खां आहिनि सजन।।

2. दिलडी मुंहिंजी संभारे, थी लिंवं लिंवं तिनिखे सारे थी।
काटे छदिनि सब जीव जा बंधन।।

3. पल–पल तिनखे मां याद कर्यां, दम दम तिन जो मां ध्यान धर्यां।
रात ऐं दींह कयां तिनि जो भजन।।

4. ''चतुरी'' तिनिजी दासी आ,मुंहिंजो सत्गुरु प्रेम प्रकाशी आ।
वसंदा रहनि शल सभजे मन।।



## भजन–86

तर्जः तुम रूठ के मत जाना ........
थलुः दे दर्शन सर्वानन्द स्वामी। तो में भक्तीअ संदी मस्ती,
हुई नेणनि में मुदामी।

1. याद आहीं जयपुर आ जोगी।
तुंहिंजे में मिठा बणियो।
मनड़ो ही मुहिंजो वियोगी।।

2. फिरे अखियुनि में मूरत निमाणी।
ना भुलिजे कदुहिं तुंहिंजी,
जा सूरत शाहाणी।।

3. तुंहिंजी घुरिजे कृपा साईं।
शल ''हेमन'' ते पंहिंजो,
हथु महिर जो घुमाईं।।

## भजन–87

टेकः मेरे सत्गुरु सर्वानन्द बाबा, तेरे दर पे स्वाली हैं आए
करदो पूरी सभी की मुरादें, बैठे है खाली झोली फैलाए।।

1. आप दाता हैं दीन दयालू, आए शरण में लाखों श्रद्धालू।
शरन आए को पार लगा दो, तेरे दर पे .............।।

2. दीन दुखियों का दुखड़ा मिटाया, तूने निर्धन को धनवां बनाया।
भरदो खुशियों से दामन हमारा, तेरे दर पे .........।।

3. ऐसा जयपुर में मन्दिर बनाया, प्रेमियों के हृदय को लुभाया।
मेरे मन का भी मन्दिर बसादो, तेरे दर पे ..........।।

4. ''श्री मुक्त'' है दास तुम्हारा, मांगता है चरनो का सहारा।
रखदो गुरुदेव अपनी शरण में, तेरे दर पे ..........।।

## भजन–88

तर्जः करती हूं तुम्हारा व्रत मैं .............

थलुः करे याद थो हर को सत्गुरु – स्वामी सर्वानन्द अवतार।
अची दर्शन दे तूं दाता, बुधी प्रेमिनि जी त पुकार।
जय–जय मुंहिंजा स्वामी, जय अन्तरयामी।।

1. तोखे सत्गुर सभको सारे, पल पल थो पुकारे।
तुहिंजे मिलण जूं राहूं, खणी नेण थो निहारे।
हिकवार अची मिलु सभ सां, महबूब मिठा मनठार।।

2. कृष्ण जीअं मुरली वजाए, तो मन हो चोरायो।
अनुभव जो ज्ञानु देई, सुतलनि खे जागायो।
देई सत्नाम साखी मंत्र, कयो प्रेम सन्दो परिचारु।।

3. वएं मिठिडी वाणी बुधाए, सच्चा सत्गुर समझाए।
वएं देस विदेस जे प्रेमिनि खे, सांई पहिंजो बणाए।
कनि याद हिन्द सिन्ध वारा, अचु ''श्रवन'' जा आधार।।

## भजन–89

तर्जः आदमी मुसाफिर है ........

थलुः मुंहिंजो स्वामी सर्वानन्द, सजुण सचारो हो।
ज्ञानी ध्यानी गुरुदेव, जोगी जयपुर वारो हो।।

1. सादी सूधी हुई रहिणीं जहींजी,
कुर्ब वारी हुई कहिणीं जहींजी।
नाम संदो हंयों जंहिं नारो हो।।

2. मुरली मिठी वियो मुखं सां वजाए,
सत्संग जी साजन वियो रास रचाए।
भगतीअ सन्दो सांई भण्डारो हो।।

3. मुख में जहिंजे हुई मिठिड़ी बाणी,
सुहिणी सजुण जी हुई समझाणी।
दुनियां में रहन्दे भी नियारो हो।।

4. याद सजुण जी हर हर सताए,
साजन व्यो सभखे, सिक में सिकाए।
''शास्त्रीअ'' जे जीअ जो जियारो हो।।



## भजन–90

तर्जः स्वामी सत्गुरु टेऊँराम आए ...........

टेकः स्वामी सर्वानन्द प्यारे, अब आओ पास हमारे
तुझे प्रेमी सभी पुकारे ..........

1. मधुर – मधुर मुस्कान तुम्हारी, जिसने मोही दुनिया सारी।
दर्शन से दुख टारे ।।

2. अमृत मय हैं वचन तुम्हारे, सुनते मन भए मस्त हमारे।
संसा सकल निवारे ।।

3. ब्रह्म ज्ञान का दिया उपदेशा, सब का मेटा ताप कलेशा।
जन्म मरण दुख टारे ।।

4. प्रेम का प्याला सब को पिलाया, किसकी दिल को नाहिं दुखाया।
सदा सबके काज संवारे ।।

5. जोई आए शरणि तुम्हारे, तिन के सारे दूख निवारे।
''दास होतू'' चहे दर्श तुम्हारे।।

## भजन–91

तर्जः बाबुल का ये घर बहिना ........

थलुः सचे स्वामी सर्वानन्द जी, असां महिमा गायूं था।
अहिड़ी व्यो करणी करे, तंहिंखे सिरड़ो, झुकायूं था।।

1. हीउ सन्तु सियाणो हो, ऐं निहठो निमाणो हो।
दर्द रखी दिलि अन्दरि रीझायो राणो हो।
अहिड़े मिठे मलिक जा, असां मेला मनायूं था।।

2. जोगी थिया जग में धणा, हीउ लालु लासानी हो।
रहियो हिन दुनियां में, जींयं शुकदेव ज्ञानी हो।
अहिड़े सुहिणे सत्गुर जा, असां चेला चवायूं था।।

3. अहिड़ी व्यो करणी करे, अजु दुनियां थी याद करे।
पंहिंजनि बचिड़नि ते व्यो महिर जी नज़र धरे।
ज्ञानु दिनऊँ जेको, पंहिंजे हिरदे हंडायूं था।।
4. जदहिं थो याद अचे, था गोढ़ा गिलन ता वहनि।
प्यारु दिनऊं अहिड़ो, अजु प्रेमी प्या सिक में सिकनि।
सूरत विसरे नथी, असीं रोजु निहारयूं था।।
5. मन में प्यास आहे, हीअ दिलड़ी उदास आहे।
साईं तुंहिंजे दर्शनि जी, अन्दर में आस आहे।
शल तोसां अचे रहिजी, इहो दान त चाहियूं था।।
6. ''भोजा'' संगति ते आहे, कृपा पंहिंजी जंहिं कई।
महिमा न गाए सघां, गुण कहिड़ा सघा मां चई।
साई सभु कुछु थव बखिश्यो, लख थोरा भायूं था।।

## भजन–92

तर्जः सखी सेजा गुलनि सां सजायो ..........
थलुः सत्गुरु सर्वानन्द प्यारो, जेको वाह जो वजाए वियो वारो।।
1. ज्ञानिनि में हुयो ज्ञानी, ध्यानिनि में हुयो ध्यानी।
हुयो सन्तनि में संत सचारो।।
2. त्यागिनि में हुयो त्यागी, वैरागिनि में हो वैरागी।
हुयो सभिनि गुणनि जो भण्डारो।।
3. मान हूंदे हुयो निर्मानी, लाल सचो हो लासानी।
हुयो रहिणीअ कहिणीअ वारो।।
4. जेको दर ते आयो सवाली, वयो सो ना कदहिं खाली।
हुयो आश पुजाइण वारो।।
5. नंढे वदे सां करे न्याज़ी, करे सभ जी वियो दिलि राज़ी।
हुयो ''हरगुन'' संगति जो सहारो।।



## भजन–93

थलुः स्वामी सर्वानन्द संत सुधीर हुयो।
जिएं शिव शंकर ऐं कबीर हुयो।।
1. वयो सत्नाम साक्षीअ जो मंत्र जपाए, साक्षी शिवोऽहम् धुनियूं लगाए।
गुरु नेम सां वयो पाण निभाए, सदा रहणीअ जो त गंभीर हुयो।।
2. वयो प्रेम प्रकाशी पौधो हणी, खुशबू सब खे वई आहे वणी।
माली तहिंजो थियो पाण धणी, आशिक असुल अकसीर हुयो।।
3. हिंद सिंध पई हाक करे, विलायत सारी पाई साख करे।
कुर्बदार वयो सबसां कुर्ब करे, निमाणो नम्रता जो त नर वीर हुयो।।
4. वयो प्रेम प्रकाश ग्रन्थ लिखी, जेको प्रेमी पढ़े सो सदा सुखी।
सुरति सद्गुरु जी हुई बेहद तिखी, ठाहींदो तालिब जी तकदीर हुयो।।
5. महान ब्रह्म वेता थी ब्रह्म जी कथा कई, सुहिणी रावल वयो थी रहति रही।
परपंच सां तंहिंजी कान पई, चवे ''दास भगवान'' गंगा जीएं निर्मल नीर हुयो।।

## भजन–94

तर्जः रहते हो किस गली में ...........
थलुः स्वामी सर्वानन्द सत्गुर, मूंखे तूं दे सहारो।
मूंखे तूं दे सहारो, आहीं मर्दु तूं मोचारो।
आहीं मुंह में मणियां वारो, आहीं जोगी जयपुर वारो।।
1. तुंहिंजे ई दर ते आयुस, सत्गुर बणीं सुवाली।
कृपा करे तूं पंहिंजी, खावन्द न छदिजांइ खाली।
दे गैब मां जरी का, भरयल तुंहिंजो भण्डारो।।
2. पल पल पयो पुकारियां, कृपा जी दे कणीं तूं।
आहीं महरबान मालिक, दे महर जी मणी तूं।
तोखां सवाइ साजन, नाहे मुंहिंजो कोई चारो।।

## भजन–95

तर्जः दिन सारा गुजारा तेरे अंगना ....

थलुः सभु गीत खुशीअ जा गायो, अवतार वठी जग आयो।
सचो स्वामी सर्वानन्द।।

1. धनु माता ईश्वरी हुई, धनु पिता हो सेवकराम।
भिटशाह जे नगर में, आयो सचो सुखधामु।
विस्पति जो दीन्हुं आ धनु धनु, दिनो सत्गुर सभ खे दर्शन।
2. नंढपण खां नींहु लाए, जंहिं जग खां कयो किनारो।
वठी शरण सत्गुरुअ जी, हंयों नाम जो हो नारो।
तन मन जी भेट चढाए, वतो सत्गुर खे रीझाए।।
3. थी कृपा सत्गुर जी – दिठो सभ में नूरु नूरानी।
पढ़ी प्रेम जी वाणीअ खे –कटी काल जी जहिं कानी।
सम ऐं सन्तोष खे धारे – दीयो ज्ञान सन्दो व्यो बारे।।
4. वञी हिन्द में ऐं सिन्ध में, गुरु ज्ञान जी ज्योति जगाई।
सत्नाम साखी जपाए, अविद्या ऊंदहि भजाई।
वयो जोगी जग खे जागाए, झण्डो धर्म सन्दो व्यो झुलाए।।

## भजन–96

तर्ज आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं ......

टेकः आओ भक्तो तुम्हें सुनाएं, लीला पुरुष महान की।
सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द, योगी दया निधान की।।
सत्नाम साक्षी बोल ......

1. मात–पिता परिवार प्यार सब एक साथ ही छोड़ा था।
कुटुम्ब कबीला जग के बन्धन, सबसे नाता तोड़ा था।
ग्राम धाम निज जन्म भूमि पुनि, सबसे मुंह को मोड़ा था।
त्याग सकल सुख भोग एक, ईश्वर से नाता जोड़ा था।
भूल भुलैया भूल जगत को, हरि से ही पहचान की।।
2. गंगा जी के पावन तट पर, उत्तर काशी धाम था।
जपता हरि का नाम वहां पर, बैठा आठों याम था।
मार विकार हृदय को जीता, विषय वासना काम था।
ध्यान मग्न बीते कितने दिन, सहा शीत और धाम था।
दूध पिलाया अपने हाथों, कृपा हुई भगवान की।।
3. जन्मभूमि और कर्मभूमि फिर, आकर आप बनाई थी।
धर्म सनातन ध्वजा घुमाकर, घर–घर में फहराई थी।
सत्नाम साक्षी का प्रचार कर, शाखाएं खुलवाई थीं।
जन–जन के मन में जागृति की, नूतन ज्योति जगाई थी।
हिन्दू, सिक्ख, मुसलमां सब पर, झोली खोली ज्ञान की।।
4. अमरापुर के जल के छींटे, अमृत बनकर आये थे।
आत्म शक्ति से दुष्ट सुधारे, अद्भुत कार्य दिखाये थे।
रोग भगाये, दुःख मिटाये, पुत्र किसी ने पाये थे।
डाकू डाका भूल गए जब, चरण शरण में आये थे।
मनकरा में जीत जलाकर सुध ली सारे जहान की।।
5. देश विभाजन के पीछे, जयपुर के भाग जगाये थे।
स्वामी सर्वानन्द जी ने आश्रम, मन्दिर बनवाये थे।
गुरु का नाम गुण सर्वानन्द ने, सत् करके दिखलाये थे।
निज लीला दिखलाकर लीला, धाम के धाम सिधाये थे।
स्वामी हरदास की रचना, यह उनके गुण ज्ञान की।।

## भजन–97

तर्जः होठों से छूलो ............

टेकः स्वामी सर्वानन्द साहिब, तेरी शान निराली है।
हरी नाम की मस्ती में, आखों में लाली है।।

1. संसार के भटकन से, तुम राह दिखाते हो।
माया के अंधेरे में, तुम दीप जलाते हो।
इस ज्ञान के दीपक से, संगत उजियाली है।।
2. तेरे सत्संग सरवर में, जो डुबकी लगाता है।
ज्ञान ध्यान ओ भक्ती के, मोती वह पाता है।
जो स्वाली दर आवे, जाता नहीं खाली है।।
3. संसार में सन्त रहें, सन्तों में खुदा रहता।
पानी में कमल जैसे, पानी से जुदा रहता।
इस अद्भुत करनी से, संगत मतिवाली है।।

## भजन–98

तर्जः नाले अलख जे ...

थलुः खणी वंञु नियापो कबूतर उडामी।
जिते आहे सत्गुरु – सर्वानन्द स्वामी।।

1. उथनि रोज़ उधमां, प्रेम्युनि जे मन में।
लगी आहि तिनिखे, तुंहिंजी तार तन में।
उन्हनि साण बाबा, अची थीउ हामी।।

2. संगति तोखे सारे–रोई थी पुकारे।
अची दे तूं दर्शन, खणी नेण निहारे।
ईहो अर्जु संगति जो, वञे शल अघामी।।

## भजन–99

तर्जः होठों से छू लो तुम ......

टेकः मेरा सत्गुरु सर्वानन्द, था सचमुच आनन्द कंद।
तन मन वाणी में जिसके, था आनंद ही आनंद।।

1. माँ ईश्वरी देवी के, वो आँख का तारा था ।
श्री सेवकराम पिता के, दिल का वो दुलारा था।
उनके चरणों में मेरा, है बार–बार नित वंद ।।

2. था जनम लिया जिसने, अपने सत्गुरु के लिये।
सारा जीवन अपना, सत्गुरु के लिए ही जिये।
सत्गुरु की कृपा से, पाया पूरण ब्रह्मानंद ।।

3. श्री राम को जैसे था श्री हनुमान प्यारा ।
स्वामी टेऊँराम को भी, था सर्वानन्द दुलारा।
गुरु भक्ती का सबको, दिया शीतल परमानन्द ।।

4. स्वामी टेऊँराम के वचनों, को घर–घर पहुंचाया।
सत्नाम साक्षी मंतर, खुद जपा और जपवाया।
जयपुर में अमरापुर, था बनवाया स्वच्छन्द।।

5. कैसे तुमको भूले, कोई भूल न पायेगा।
तुम याद हो सबको गुरू, कोई कैसे भुलायेगा।
सबके अंदर बैठा, तू बनके आनंद कंद ।।



## भजन–100

तर्जः सारी सारी रात तेरी याद सताए ......

टेकः जयपुर वासी तेरी याद सताए,
याद सताए मोहे, चैन न आये रे – 2

1. इक–इक पल बीते यूं तो बरस रे।
होके दयालु तुझे आया न तरस रे।
तुझ बिन कौन मेरी, बिगड़ी बनाए रे।।

2. तेरा ही सहारा मैंनूं तेरा ही ध्यान धरूं।
तेरी ही महिमा का मैं, निशदिन वख्यान करूं।
ऋषी मुनि हार गये, अन्त न बताए रे।।

3. कमली मैं होके दाता तुझको रिझाऊं।
औगुणां दी खाण दाता कैसे मनाऊं।
पकड़ा है दामन तेरा, कैसे छूट पाए रे।।

## भजन–101

तर्जः भोले नाथ से निराला.....

टेकः स्वामी सर्वानन्द से प्यारा, कोई और नहीं ।
ऐसा जग को तराने वाला, कोई और नहीं।।

1. ज्ञान ध्यान की मूरत है ये, भक्ती से भरपूर है ये।
ज्योति जगाये अपने मण्डल में, शक्ती से भरपूर है ये।
ऐसा भक्ति बढ़ाने वाला, कोई और नहीं।।

2. काम क्रोध को जिसने मारा,जीते जी किया जग से किनारा।
लोभ मोह अहंकार को छोड़ा, जग से अपना नाता तोड़ा।
ऐसी वृति बनाने वाला, कोई और नहीं।।

3. सत्गुरु मेरे सुन्दर ऐसे, सूरज चंदा चमके जैसे।
सत्गुरु मेरे जगमग चमके, नवलख गगन में तारे जैसे।
ऐसी ज्योति जगाने वाला, कोई और नहीं।।

## भजन–102

तर्ज दिल लूटने वाले ........

थलु मुहिंजा जयपुर वारा जोगीराज, तुंहिंजी लीला अपर अपारी आ।
साईं अंतु न तुंहिंजो कोई पाए, बेहद बात न्यारी आ।।

1. जदहिं वेही सभा में गाईं थो, मोहन ज्यां मुरली वजाईं थो।
प्रेमिनि जा चित चोराईं थो, ऐं सुधि बुधि सभ जी भुलाई थो।
वरी मंद मंद मुस्काईं थो, मुखड़े जी झलक प्यारी आ ।।
2. बणीं सैलानी तो सैरु कयो, ऐं दूर दुनियां जो गैरु कयो।
भुलिजी बि न कंहिंसां वैरु कयो, हर जीव मात्र जो खैरु कयो।
साईं जिति जिति पेरा पाता तो, उते थी वई बाग बहारी आ।।
3. तुंहिंजो घघो चिपी ऐं बदनु सुहिणो, आहे रूप सलोनो मन मोहिणो।
प्रेमिनि जे गिचीअ जो आ गहिणो, तुंहिंजो मुखड़ो सदाई आ हसिणो
साईं सुहिणी तुंहिंजी सूरत ते, हर मस्तु थियो नर नारी आ।।
4. आहे गोकल खां बी वधिक सुन्दर, जयपुर वारे जोगीअ जो मन्दर।
आहे सचु पचु सरर्तयूं शाम सुन्दर, शल यादि रहे सो मुंहिंजे अन्दर।
जेके भी आया तुंहिंजी शरण, तिनजी तो लाज बचाई आ।।

## भजन–103

तर्जः रेशमी सलवार कुर्ता जाली का ....

थलुः स्वामी सर्वानन्द प्रेम प्रकाशी हो।
अमरापुर जे धाम जो पिण वासी हो।।

1. हुयो रागु मंझिसि रूहानी, हुयो नूर सदा नूरानी।
हुयो ज्ञानिनि में महा ज्ञानी, हो लालु सचो लासानी।
योग अभियासी हो।।
2. हो बाल जती ऐं जोगी, हो संतु सचो सहयोगी।
हो भोगिनि ज्यां ना भोगी, हो निर्मलु निहठो निरोगी।
प्रेम प्यासी हो ।।
3. को अहिड़ो विरिलो थींदो, जो दाणु ददनि खे दींदो।
सभिनी जा अडणु अदींदो, कुलनी जा कष्ट कटींदो।
सदा सुखरासी हो।।



## भजन–104

तर्जः तुंहिंजी मुंहिंजी प्रीति श्याम ............

थलुः मुहिंजो स्वामी सर्वानन्द, सचो गुरुदेव हो ज्ञानी।
फेरु न जंहिं में फन्दु, हो मुंहिंजे जीअ जो जानी।।

1. मुख में जंहिंजे मिठिड़ी बाणी,सुहिणी साजन जी हुई समझाणी।
सभिनी खे हो पसन्द, गायो जंहिं रागु रूहानी।।
2. वृती जहिंजी हुई वैरागी, आशिकु असली हो अनुरागी।
निर्वेरी निर्द्वन्द्व, हुयो निहठो निरमानी।।
3. मिठिड़ी मुरली जंहिं त वजाई, सत्संग जी जहिं रास रचाई।
जणु हो कृष्णचन्द, दयालू दिलबर दानी।।
4. ''शास्त्री'' भी जंहिंजा गीत पियो गाए, श्रद्धा जा ही गुल त चढ़ाए।
अहिड़ो आनन्द कन्दु, हुयो सत्गुरु सैलानी।।

## भजन–105

तर्जः सिक में आहिनि फाइदा

थलुः यादि जोगिनि जी सताए, चितु चोराए व्या हली।
चितु चोराए व्या हली, मनड़ो मुंझाए व्या हली।।

1. जिनि प्याला प्रेम जा, भरे दिना थे प्यार मां।
दर्शन लाइ दर–दर फिरां हाइ, मूं ठडे व्या हेकली।।
2. दींह गुजरी साल वियड़ा, खबर आई कान का ।
कींअं करियां कंहिंखां पुछां हाइ, जिगर जेरा व्या जली।।
3. सिक त लहन्दी कान का, संसार जे माण्हुनि मंझां।
केर केदा प्यार दे ऐं, सुख बि केदा दे भली
4. ''हरी'' हाणे हलु उते जिति, स्वामी सर्वानंद आ।
स्वामी टेऊँराम खातिर, जंहिं कई भगिती भली।।

## भजन–106

तर्जः यहां वहां सारे जहां पे ................

थलुः स्वामी सर्वानन्द तुंहिंजी, महिमा अपार आ।
जिते किथे आहे तुंहिंजी जै जै कार, – 2
स्वामी टेऊँराम जो ही, साग़ियो अवतार आ।

1. तूं ग़रीबनि जो सहारो, तूं अनाथनि जो पियारो
तो में निविड़त, आहे मुहब्बत, आहीं नियारो।
फानी तो समधो ही, सारो संसार आ।।

2. तुंहिंजी आहे मधुरु वाणी, ब़ोलीं थो तूं मिठिड़ी ब़ाणी।
कयई अमीरी, गदु फ़कीरी, शानु शहाणी।
हिन्द चाहे सिंध में थियो, नालो निरिवार आ।।

3. नियाजु आ तो में इलाही, तो कई सभ सां भलाई।
तुंहिंजी भगिती जोगु ऐं जुगिती, कयई कमाई।
''मोती'' तुंहिंजो केदो न, मालिक सां प्यार आ।।

## भजन–107

तर्जः ऐ गुल बन्दन .......

थलुः ऐ ऐ हवा, ऐ ऐ हवा, न्यापो त दिजांइ, मुंहिंजे सत्गुरु खे।
मुंहिंजे दीन दुनिया जे रहिबर खे,
किथे किथे वसे थो, अमरापुर जो साईं।।

1. ग़ोल्हे ग़ोल्हे गली ऐं शहर शहर त थकियसि मां।
ग़ोल्हे ग़ोल्हे गली ऐं झंगल जबल त थकियसि मां।
नीशान पतो कोई न मिलियो,
सत्गुरु जे विछोड़े में जीअड़ो जलियो, जिते किथे ....



2. सत्गुरु थो वसे सभ कंहिंजे दिलियुनि जे अन्दर में।
सत्गुरु थो वसे सभ कंहिंजे त मन जे मन्दर में।
नीशान पतो त इहो आ पको,
हरहंधि थो वसे सत्गुरु त सचो, जिते किथे .......

3. गुरु मंत्र उचारियो भोला भरम मिटिजी वया।
अज्ञान अन्धेरो मोहु ममति मिटिजी वया।
हाणे सभई चओ सत्नाम साखी।
स्वामी सर्वानन्द सूरत साग़ी, ''राम'' सोई आहे अमरापुर जो साईं।।

## भजन–108

तर्जः कसमें वादे प्यार वफा .........

टेकः झूठे जग को छोड़ के आजा, सत्गुरु की दरबार में।
सोच के देख ले क्या पाया मन, तुमने इस संसार में।।

1. अमृत वेला बचपन बीता, खेलकूद व्यवहार में।
यौवन रूपी दिन भी गया बस, विषय भोग परिवार में।
जीवन की जब सांझ हुई मन, डूबा मोह विकार में।।

2. जिनके पीछे स्वास अमोलक, कौड़ी जैसे गंवाए हैं।
साथ निभाएंगे ना दुःख में, वे सब सुख के साए हैं।
छोड़ अकेला चल देंगे सब, तुझे बीच मझधार में।।

3. झूठे जग के झूठे साथी, झूठा उनका नाता है।
क्या पाएगा जग से ना ये, किससे साथ निभाता है।
फिर भी फंसा हुआ है ऐ मन, झूठे जग के प्यार में।।

4. बीत गया जो समय न फिर वो, लौट कभी भी आता हैं।
चला गया जो जग से साथी, फिर न कभी मिल पाता है।
खुद को अकेला पाएगा तू, साहिब की सरकार में।।

# श्री प्रेम प्रकाश पंथ महिमा भजन

**तर्जः**है अपना दिल तो आवारा ........................

**थलुः** असां जो पंथ आ प्यारो, प्रेम प्रकाशी सुखकारी।
साखी सत्नाम मन्तर आ, वसे जुग–जुग हीअ फुलवाड़ी।।

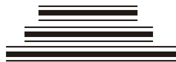
1. स्वामी टेऊँराम, सुखनि जो धाम।
माता जंहिंजी कृष्णा, पिता चेलाराम।
खण्डूअ जे शहर में आयो, वठी अवतार–अवतारी।।

2. आ स्वामी सर्वानन्द, जीएं मुरली मुकन्द।
वाणी मिठी बुधाए, दिनो जंहिं आनन्द।
कटे अज्ञान अविद्या खे, ज्ञान जी ज्योति जंहिं बारी।।

3. स्वामी शांतिप्रकाश, पुजाए सभ आश।
देई नाम जो दान, काटी जम जी फास।
पियारे प्रेम अमृत खे, राह रोशन कई सारी।।

4. स्वामी हरिदासराम, दे प्रेम जो पैगाम।
सिख्या सच्ची बुधाए, दे दिल खे आराम।
भरम संसा सभई साड़े, से कनि था ज्ञान उजियारी।।

5. अमरापुर धाम, आहे सो अभिराम।
झूले झण्डो सदाईं, अमर रहे नाम।
झुकाया सीस चरननि में, वञां सत्गुर तां बलिहारी।।





# सोलह–शिक्षाएं

दोहाःसोलह शिक्षाएं सुनो, सुखदायक हैं जोय।
कह टेऊँ संकट कटे, देत परम गति सोय ।।

शैरः आदि फल वीचार के तुम, कर पीछे सब काम जी।
ये वचन मन माहिं धारे, पाय सुख आराम जी ।।

2. उद्यम कर शुभ कर्म कारण, सीख ये ही सार है।
भाग पर कछु नाहिं राखो, वेद ग्रन्थ पुकार है।।

3. समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में।।

4. सर्व से तुम गुण उठाओ, दोष दृष्टी को हरे।
देख अवगुण आपना, जो बहुत हैं मन में भरे ।।

5. सर्व जीवों से करो हित, निन्द किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का, भाव शुद्ध हृदय धरो ।।

6. जीव किसको ना दुखाओ, दया सब पर कीजिये।
राम व्यापक जान सबमें, द्वेष को हर लीजिये ।।

7. समय जोई गुजर जावे, याद ना तुम ताहिं कर।
आने वाले वक्त की भी, चिन्ता मन में नाहिं कर।।

8. जो बनावे ईश्वर तुम, ताहिं पर राजी रहो।
जा बनी सा है भली सब, यों सदा मुख से कहो।।

9. आपने स्वार्थ लिये तुम, झूठ ना कब बोलना।
वचन साचा मधुर हो जब, तबहिं मुख को खोलना।।

10. शरण तेरी आय जोई, ताहिं दे सन्मान जी ।
यद्यपि वैरी होय तो भी, ना करो अपमान जी।।

11. और का उपकार कर तुम, छोड़ स्वार्थ आपना।
लोक पुनि परलोक में कब, होय तुमको ताप ना।।

12. धर्म अपने माहिं हरदम, प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर, धर्म से हटना नहीं।।

13. मौत अपना याद कर ले, तिंह भुलावो ना कभी।
जान मन में मरण का दिन, निकट आया है अभी।।

14. धर्मशाला जान जग को, जीव सब महिमान है।
मोह किससे ना करो, सब स्वप्न सम सामान है।।

15. वेद गुरु के वचन पर नित, तुम करो विश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी ।।

16. आदि मंतर ले गुरू से, जाप जप धर ध्यान को।
जगत बंधन तोड़ विचरो, पाय आतम ज्ञान को।।

दोहाःये शिक्षाऐं याद कर, मन में पुनि वीचार।
कह टेऊँ करनी करे, भव निधि उतरो पार।।







# सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

## आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम ।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ।।ॐ।।

जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।।स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।।ॐ।।

प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मन्त्र साक्षी सत्नाम ।।स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम।।ॐ।।

देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश।।स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।।ॐ।।

पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन बाजे।।स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन राजे ।।ॐ।।

आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती।।स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती।।ॐ।।

धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।।स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।।ॐ।।

सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावन गुन तुम्हरे।।स्वामी।।
अंत न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।।ॐ।।

जो जन तुम्हरी आरती गावे, पावे सो मुक्ती।।स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरू भक्ती।।ॐ।।

# सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

## आरती

ॐ जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द ।
धर्म कर्म का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द ।।ॐ।।

तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी।।स्वामी।।
शेष शारदा नित गुण गावे, महिमा अति भारी ।।ॐ।।

तन पर चोला गेरू रंग का, सिर पे जटाधारी।।स्वामी।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी।।ॐ।।

अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुंचाया।।स्वामी।।
भूले भटके दीन जनों को, सत् मार्ग लाया ।।ॐ।।

अधम उद्धारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी।।स्वामी।।
भव जल तारन पार उतारन, कारन देह धारी।।ॐ।।

देश विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई।।स्वामी।।
सोऽहम् शब्द का मन्त्र दे वह, ज्योती दिखलाई।।ॐ।।

अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता।।स्वामी।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूरण गुरु दाता।।ॐ।।

परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी।।स्वामी।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी।।ॐ।।

टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार।।स्वामी।।
गुरू भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब किया प्रचार।।ॐ।।

पूरण गुरु की पूरी आरती, जो जो नर गावे।।स्वामी।।
पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे।।ॐ।।



# सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

## आरती

ॐ जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश।
प्रेम के सागर सत्गुरु मेरे, मन में करो निवास ।।ॐ।।

मात पिता थे धर्म की मूर्ति, उपजा पूत सपूत।।स्वामी।।
बचपन में ही मन में जागी, कृष्ण दर्श की प्यास ।।ॐ।।

टेऊँराम के श्री चरणों में, जीवन सौंप दिया।।स्वामी।।
उनकी दया से परम पद पाया, अद्भुत किया विकास।।ॐ।।

वेद वाणी और गुरुवाणी का, पाया ज्ञान भण्डार।।स्वामी।।
प्रेम प्रकाश मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास।।ॐ।।

देश विदेश में भ्रमण करके, सबको मोह लिया।।स्वामी।।
सत्नाम साक्षी मन्त्र जपाकर, काटी यम की फास।।ॐ।।

देश धर्म की रक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया।।स्वामी।।
दीन जनों की सेवा में ही, पाया परम हुलास।।ॐ।।

एकादशी और गौ सेवा का, खूब किया प्रचार।।स्वामी।।
कण कण में श्री कृष्ण को देखा, किया भेद भ्रम नाश।।ॐ।।

जो जो दर्श करे सद्गुरु का, मन में रख विश्वास।।स्वामी।।
आशा उसकी पूर्ण होवे, कारज होवन रास।।ॐ।।

पूर्ण श्रद्धा से जो प्रेमी, आरती यह गावे।।स्वामी।।
सुख सम्पति और सुमती पावे, अमरापुर हो वास।।ॐ।।

# सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

## आरती

ॐ जय गुरु हरिदासराम, स्वामी जय गुरु हरिदासराम।
सत्चित आनन्द ब्रह्मस्वरूपा, सर्व सुखों के धाम ।।ॐ।।

अमरापुर से आए जोगी, लेकर सत् सन्देश ।।स्वामी।।
अमृतवाणी सब सुख खानी, अमर किया उपदेश।।ॐ।।

बालापन से गुरु चरणों में, मनुवा तव लागा ।।स्वामी।।
घर को त्यागा भया विरागा, सतगुरु रंग पागा।।ॐ।।

सत्गुरु टेऊँराम साहब में, अटल रखा विश्वास।।स्वामी।।
सत्नाम साक्षी जाप जपाकर, प्रेम किया प्रकाश।।ॐ।।

सत्गुरु सर्वानन्द की सेवा, तन मन से कीनी।।स्वामी।।
पूर्ण गुरु की कृपा पाकर, सुरति शब्द भीनी।।ॐ।।

निर्मोही निर्मान निःसंगी, निर्भय निष्कामी।।स्वामी।।
निरइच्छा हो जग में विचरे, सत्गुरु सुख धामी।।ॐ।।

त्याग तपोमय जीवन धारे, सत्गुरु गुण गाया।।स्वामी।।
देश विदेशा सत् उपदेशा, सब को पहुँचाया।।ॐ।।

नभ में जल में पावक थल में, ज्योति तेरी जागे।।स्वामी।।
श्रद्धा से जो शरनी आए, भय तांका भागे।।ॐ।।

प्रेम भाव हृदय में भरकर, आरती जो गावे।।स्वामी।।
सुमति प्रकाशे–सब दुख नाशे, मुक्ती पद पावे।।ॐ।।



## छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।
रहस्यारामं दायक धामं, नितनिष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं, श्री टेऊँराम गुरुज्ञानी।
चावल चन्दन कुंगूं केसर, फूलों की बरखा बरसाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरती साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ।

## पल्लव

आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर न काई।
तू हरि दाता तुम हरि माता, मेरी आश पुजाई।
पाइ पल्लव मैं पेरे प्यादी, आयस हेत मंझाई।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही।
नाम तुम्हारा साबुन कर मैं, धोसां पाप सभेईं।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाई।।

## पल्लव

पलउ जे पाइन दाता तुंहिंजे दर ते।
दाता दर आयनि जा, अर्ज ओनाईं।
मिड़ई तिनि जे तन मन जा, दुखड़ा मिटाई।
आसूं अघाई, आसू आस वन्दनि जूं।
जो जन आ गुरु शरण में, बैठ करे अर्दास।
कहे "टेऊँ" तिस दास की, पूरण करिये आस।
दूख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास।
कारज होवन रास, संशय कोई ना रहे।

# श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य

## हिन्दी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ | 301/– |
| 2. | सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग) | 50/– |
| 3. | सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अन्तिम भाग) | 75/– |
| 4. | अमरापुर वाणी (भजन संग्रह) | 30/– |
| 5. | अमर कथा | 10/– |
| 6. | अमरापुर दर्शन | 5/– |
| 7. | यमराज नचिकेता (कविता) | 5/– |
| 8. | चूड़ाला शिखरध्वज (कविता) | 5/– |
| 9. | श्री प्रेम प्रकाश दोहावली | 12/– |
| 10. | प्रार्थना | 10/– |
| 11. | ब्रह्मदर्शनी (पद) | 10/– |
| 12. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग) | 5/– |
| 13. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग) | 10/– |
| 14. | साक्षी दर्शन | 2/– |
| 15. | स्वामी सर्वानन्द सन्देश | 25/– |
| 16. | सद्गुरु टेऊँराम चालीसा | 1/– |
| 17. | गुरु आराधना (सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन) | 15/– |
| 18. | गुरु वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन) | 15/– |
| 19. | वामन बली (कविता) | 5/– |
| 20. | कवितावली छन्दावली | 2/– |
| 21. | जन्म साखी (सद्गुरु टेऊँराम जी) | 3/– |
| 22. | नित्य नियम प्रार्थना | 5/– |
| 23. | स्वामी गुरुमुखदास भजन माला | 2/– |
| 24. | स्वामी गुरुमुखदास दोहावली | 2/– |



## सिन्धी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ | 151/– |
| 2. | सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग) | 50/– |
| 3. | सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अन्तिम भाग) | 50/– |
| 4. | अमरापुर वाणी (देवनागरी लिपि) | 30/– |
| 5. | स्वामी सर्वानन्द सन्देश | 25/– |
| 6. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग) | 10/– |
| 7. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग) | 10/– |
| 8. | साक्षी दर्शन | 2/– |
| 9. | गुरु आराधना (सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन) | 10/– |
| 10. | प्रार्थना | 5/– |
| 11. | नित्य नियम प्रार्थना | 5/– |

## अंग्रेजी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग) | 10/– |
| 2. | प्रार्थना | 3/– |
| 3. | ब्रह्मदर्शनी | 50/– |
| 4. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग) | 5/– |
| 5. | स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग) | 50/– |
| 6. | अमरापुर दर्शन | 2/– |
| 7. | गुरु आराधना (सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन) | 10/– |
| 8. | स्वामी सर्वानन्द सन्देश | 25/– |
| 9. | नित्य नियम प्रार्थना | 5/– |

**:: प्राप्ति स्थल ::**

**श्री अमरापुर स्थान, जयपुर**

**फोनः 0141–2372423, 2372424**

**सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी उपलब्ध है।**